श्री गुरु चरणकमलेभ्यो नमः

श्री प्रिया प्रीतमाभ्यां नमः

श्री मत्यै चन्द्रकलायै नमः

श्री मत्यै चारुशीलायै नमः

श्री मन्मारुत नन्दनाय नमः

सीताराम वर्षोत्सव

जिसमें भगवान श्री सीताराम जी के वर्ष भर के बधाई, झूला, रास, शरद ऋतु, विवाह, होरी एवं जुगल झाँकी के पद आदि के उत्सवों श्री अग्रस्वामी जी, गोस्वामी श्री तुलसीदास जी, श्री कृपा निवास जी, स्वामी श्री रामचरणदास जी, श्री युगल प्रिया जी, श्री रसिक अली जी, स्वामी श्रीयुगलानन्यशरण जी आदि रसिकाचार्यों की महावाणियों का संग्रह है।

संकलनकर्त्ता एवं प्रकाशक :-

श्री वैदेही वल्लभ शरण जी

श्री हनुमान बाग, श्रीअयोध्याजी

परिवर्धित तृतीय संस्करण

संवत् २०६१, श्री चैत रामनवमी

प्रति १०००]   [न्यौछावर ४०) रुपये मात्र

श्री गुरु चरणकमलेभ्यो नमः

श्री प्रिया प्रीतमाभ्यां नमः

श्री मत्यै चन्द्रकलायै नमः

श्री मत्यै चारुशीलायै नमः

श्री मन्मारुत नन्दनाय नमः

सीताराम वर्षोत्सव

जिसमें भगवान श्री सीताराम जी के वर्ष भर के बधाई, झूला, रास, शरद ऋतु, विवाह, होरी एवं जुगल झाँकी के पद आदि के उत्सवों श्री अग्रस्वामी जी, गोस्वामी श्री तुलसीदास जी, श्री कृपा निवास जी, स्वामी श्री रामचरणदास जी, श्री युगल प्रिया जी, श्री रसिक अली जी, स्वामी श्री युगलानन्यशरण जी आदि रसिकाचार्यों की महावाणियों का संग्रह है।

संकलनकर्त्ता एवं प्रकाशक :-

श्री वैदेही वल्लभ शरण जी

श्री हनुमान बाग, श्रीअयोध्याजी

परिवर्धित तृतीय संस्करण

संवत् २०६१, श्री चैत रामनवमी

प्रति १०००] [न्यौछावर ४०) रुपये मात्र

संकलनकर्त्ता एवं प्रकाशक

श्री वैदेही वल्लभ शरण जी

[श्री हनुमान बाग, श्रीअयोध्याजी]

श्री अष्टयाम पदावली, श्रीमिथिला मधुर विलास एवं सियाअली जी का वर्षोत्सव भी प्रकाशित है।
प्रेमीजन प्राप्त कर सकते हैं।

संवत्- २०६१, श्री चैत रामनवमी
परिवर्धित तृतीय संस्करण

[प्रति १०००] [न्यौछावर ४०) (चालीस) रुपये मात्र]

मुद्रक :
श्री श्याम ऑफसेट प्रिंटर्स
अयोध्या, फैजाबाद
फोन नं० : 05278 227312
मो० नं० : 9415139688

पुस्तक प्राप्ति का स्थान

- **श्री वैदेही वल्लभ शरण जी**
  श्री हनुमान बाग, श्री अयोध्या जी

- **वैदेहीशरण**
  श्रीकान्ती पुस्तकालय
  कटारी मन्दिर, नयाघाट, अयोध्या

- **सियाराम शरण**
  स्वामी कार्तिकेय जी महाराज
  वट वृक्ष, गुप्तार घाट, फैजाबाद

- **राम दिनेश् दास**
  ग्रा० भौप्रसाद, पो० डुमरा
  जिला सीतामढ़ी, बिहार

- **श्रीराम परमहंस**
  सीताराम जी का मन्दिर
  राँची रोड, मधुबनी, बिहार

- **श्री किशोरी शरण**
  गवैय्या जी, सीतामढ़ी, बिहार

- **श्री किशोरी शरण जी**
  ग्राम अलहाव तहसील डुमरा, जिला सीतामढ़ी, बिहार

सवैया

दोऊ दुहूँ की मनोहर माधुरी देखि रहैं जु निमेष बिसारी।
दोऊ दुहूँ मुसुक्यान मई बतियान में प्रान करैं बलिहारी।।
दोऊ दुहूँ के रंग रंगे अंग में रंग वाहि रुचै रुचि धारी।
पीको लगै प्रिय प्रीत पटूको भटूको लगैं प्रिय साँवरि सारी।।१।।

दोऊ दुहूँ के स्वरूप छके ललकै न परै पलकै अखियान है।
दोऊ दुहूँन के हास विलास हुलास में जानत द्यौस निसान है।
दोऊ दुहूँ के सनेह सुभाय समाय रहे उपमान न आन है।
दोऊ दुहूँन के प्रानन प्रान जु जानिये जानके जान निदान है।।२।।

दोऊ दुहूँ को सिंगार सजें रिझवारने वारि नई सखियान को।
दोऊ दूहूँ प्रिय ऐसे लगै आजु ऐसी न दीपसिखा पखियान को।
दोऊ दुहूँ के सुजीवन प्राण सुजान सुजीवन ज्यों झखियान के।
दोऊ दुहूँ दरसै पै तऊतरसै सरसैं अँखियान को।।३।।

दोऊ दुहूँ अपने करकंज सुव्यंजन मंजु मजे में पवावैं।
दोऊ दुहूँ मुसुक्यानि महारस खानि बिलोकनि पै बलि जावैं।।
दोऊ दुहूँ मुख देखे री या लखि माधुरी भाय भरी छकि जावैं।
दोऊ दुहूँ रसरंग छके नव रंग उमंगनि सो न अघावैं।।४।।

ह्वै बलिहारि निहारि दोऊ दुहूँवारि उतारि पिये अति प्यार सों।
दोऊ दुहूँ को दुकूल हिये छुपकाइ छकै अति आनंद भार सों।।
दोऊ दुहूँ के सु नाम सुने सनै सो गुनै स्वाद सुधा रसधार सों।
दोऊ दुहूँन के गोद भरैं थहरैं अंग मोद विनोद अपार सों।।५।।

संगही दोऊ रहैं रसिया लखिकै रस रास विलास छकावैं।
दोऊ दुहूँन के अंगनि को अपने कर सेइ सुभाग सिहावैं।
दोऊ दुहूँ मन में दिन राति अनेकन भाँति अनन्द बढ़ावैं।
अंगन अंग मिलाय रहै पै तऊ मिलिवे को दुहूँ ललचावै।।६।।

अनुक्रमणिका

□□□

श्रीमते रामानन्दाय नमः

✱ संकलित पदावली का तात्पर्य ✱

'रसो वै सः' ह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति' इत्यादि श्रुतियों में ब्रह्म को रस स्वरूप कहा गया है। रस की प्राप्ति के पश्चात् ही साधक को परमानन्द की प्राप्ति होती है। **'सत्य सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' 'आनन्दं ब्रह्मेति व्यजानात्'** आदि श्रुतियों से स्पष्ट है कि सत् चित् एवं अनन्त आनन्द ये तीन ब्रह्म के स्वरूप हैं। सत् अंश से कर्मयोग चित् अंश से ज्ञान–योग तथा आनन्द अंश से भक्ति योग की अभिव्यक्ति मानी गयी है। भारतीय दार्शनिकों का यह सुनिश्चित सिद्धान्त है कि चिदंश (चेतन) होने के कारण जीव को कैवल्य मुक्ति प्राप्ति करने में स्वरूपतः अधिकार है। आनन्दांश में जीव का प्रवेश एकमात्र श्रीजी की कृपा से ही सम्भव है।

श्रीरामतापनी श्रुति में स्पष्ट है कि योगीजन अनन्त सच्चिदानन्द श्रीराम में रमण करते हैं। अतः परब्रह्म शब्द से एकमात्र श्रीराम का बोध होता है। **'रमन्ते**

योगिनोऽनन्ते–परब्रह्माऽमिधीयते' ।। वेदावतार श्रीमद्वाल्मीकि रामायण में श्रीजनकनरेन्द्रनन्दिनी के साथ श्रीअवधनरेन्द्रनन्दन श्रीरघुनन्दन की विविध विहार लीलाओं का वर्णन है– **'रामस्तु सीतया सार्द्ध विजहार बहून ऋतून्'** महर्षि कहते हैं कि श्रीराघवेन्द्र ने तो श्रीजनकराजनन्दिनीजू के साथ चिरकाल तक विहार किया। श्लोक में संवत्सरान् (बहुत वर्षों तक) न कहकर बहुऋतून् (बहुत ऋतुओं तक विहार किया) कहा गया है। इससे स्पष्ट है कि ऋतु के अनुकूल विहार का संकेत किया गया है। षड्ऋतु विहार का इस श्लोक में स्पष्ट संकेत है। इसी सिद्धान्त की दृष्टि से आचार्यों ने अपने प्रबन्धों में श्रीजानकी वल्लभजू के षड्ऋतु विहार का विशद वर्णन किया है। रसिकाचार्यों के दिव्य प्रबन्धों के गान श्रवण से ही उपासना रस का पोषण होता है।

श्री रसिक प्रकाश भक्तमाल में स्पष्ट कहा गया है कि उपासकों को अग्र स्वामी आदि के प्रबन्धों का गान तथा स्वयं नृत्य गान संध्यावन्दनादि की भाँति करना चाहिये।

'अग्रस्वामि आदि के प्रबन्ध गान समय समय स्वयं नृत्य गान संध्यावन्दन ज्यों कीजिए'। यदि ब्राह्मण प्रातः की संध्या करता है, किन्तु सायं का संध्यावन्दन नहीं करता है तो शूद्र की भांति ब्राह्मणोचित कर्मों से बहिष्कार्य है। 'स

शूद्रवद् बहिष्कार्यः सर्वस्माद् द्विजकर्मणः'। उसी प्रकार यदि उपासक नित्य इन प्रबन्धों का गान श्रवण नहीं करता है तो रसोपासना से वंचित हो सकता है। दम्पति श्रीयुगलचितचोर की उपासना की रीति प्राप्त करने के लिये जहाँ ऊर्ध्वपुण्ड्र, धनुर्बाण, नाम, युगलकंठी एवं मन्त्र ये 'पञ्चसंस्कार अपेक्षित हैं वहीं पूर्वाचार्यों के प्रबन्ध का गान भी परमावश्यक है।

भक्तमाल जी में स्पष्ट है कि-

प्रथम षडक्षर युगल मन्त्र लेइ पुनि

मिथिला अवध जन्म नातो मन भावई।

ऊर्द्धपुण्ड्र धनुवान तप्त भुज अंसन पै

कंठ में युगल कंठी शोभा सुख छावई।।

अग्रस्वामी भनित प्रबन्ध मिलि अष्टयाम,

सेवा औ शृङ्गार बीच अंकुर बढ़ावई।

इष्ट को परत्व महामाधुर्य स्वरूप जानै

दम्पति उपासना की रीति तब पावई।।

युगल श्रीसीतारामानुरागी श्री वैदेहीवल्लभशरणजी ने बड़े परिश्रम से इस षड्ऋतु पदावती का संकलन किया है। इस ग्रन्थ में श्रीरामजन्म बधाई से लेकर होली महोत्सव पर्यन्त वर्ष भर के उत्सवों में गाये जाने वाले पदों का समीचीन संग्रह है। इस ग्रन्थ के प्रकाशन प्रूफ संशोधनादि कार्यों में श्रीश्यामवल्लभाशरणजी ने महान् सहयोग किया है। अतः दोनों महापुरुष धन्यवाद के पात्र हैं।

आशा है, इस ग्रन्थ के अनुशीलन से उपासकों के हृदय में युगल रस का संचार होगा।

स्वामी सीतारामशरण

मेरे मिथिला देश में, धारे नौशय वेश।
ताते यही उपासना, चाहिए हमें हमेश।।
मैंन भई तिरहुत के, कटि घास अरु पात।
जनकलली के पद कमल, नित उठी लागत लात।

✳ धन्यवाद के दो शब्द ✳

रसो वै सः

परमात्मा रस रूप माने गये हैं। शान्त, दास्य, वात्सल्य, सख्य और श्रृंगार पंच रसों में मुख्यतया 'रस' शब्द से श्रृंगार रस ही अभिप्रेत है।

"रस शब्दोहि श्रृङ्गारे मुख्य वृत्तितया स्थितः।
अन्यत्र स भवेद्गौणः परिभाषा विवर्जितः।।

वैसे सब रस तो रस हैं ही फिर भी, अन्य रसों के लिये रस शब्द का प्रयोग गौण ही है। इसी तरह श्रृङ्गार भावापन्न श्रृङ्गारी संतों के लिये ही प्रायः 'रसिक' शब्द अभिहित है। श्रृङ्गार रस रसिक संतों के लिये प्रायः 'रसिक सम्प्रदाय' शब्द का भी व्यवहार चल पड़ा है। डाक्टर भगवती सिंह जी ने 'श्रीराम भक्ति में रसिकसम्प्रदाय' नाम का अपना एक विशाल शोध ग्रन्थ ही लिख डाला है जिस में श्रृङ्गार रस के परिचय के साथ श्रृङ्गार रस रसिक संतों के जीवन–वृत्त तथा उनकी

कृतियों का विशद विवेचन है। इस रस के रसिकों में बड़े–बड़े रसिकाचार्य सिद्ध संत हो गये हैं जिनने अपने भगवत साक्षात्कार दशा की अनुभूतियों को अपनी सहज सिद्ध वाणियों में वर्णन किया है जो 'रसिकाचार्यों की महावाणी' संज्ञा से जानी जाती है तथा जिनके पठन पाठन गान श्रवण से भगवत् लीला का साक्षात्कार होता है जो मुमुक्षुओं के लिये पारलौकिक परमानन्द प्रदायक चरम साधन हैं।

इन महावाणियों में आत्म परमात्म (जीव–ईश्वर) रमण की यावत् त्रिगुणातीत तुरीया अवस्था की केलि क्रीड़ाओं का विशद वर्णन है सो सब कल्याण कामी मुमुक्षुओं के लिये अनुपम पारलौकिक संवल हैं।

इस परिहितकारिणी बुद्धि से प्रेरित हो उदार बुद्धि महात्मा श्रीवैदेही वल्लभशरणजी (हनुमान बाग, अयोध्या) की आज वर्षों से उत्कट अभिलाषा रही कि वर्ष के प्रायः सब समैया उत्सव भगवत लीलाओं के रसिकाचार्य रचित पदों का संकलन एक ग्रन्थ के रूप में हो ताकि वर्षोत्सव के लिये साहित्य की खोज में चिन्ता न करनी पड़े। इस विचार से प्रेरित हो इस दिशा में इतने वर्षों से रसिकाचार्य रचित वर्षोत्सव के सरस पदों

के संकलन में अथक परिश्रम किया है। पुनः इस ग्रन्थ विशेष के प्रकाशन की चिन्ता भी इनके हृदय को वर्षों से आन्दोलित करती रही। कारण, यह कार्य व्ययसाध्य के अलावा श्रमसाध्य भी होता ही है। और ये ठहरे– "एक निराश्रित अभ्यागत संत"। परन्तु, सत्पुरुष का सत्संकल्प भगवान पूर्ण ही करते हैं।

"जेहि पर जाकर सत्य सनेहू।
सो तेहि मिलत न कछु सन्देहू।।"

खैर, यह लिखते हुए मुझे बड़ा हर्ष हो रहा है कि श्रीवैदेही वल्लभ शरणजी का आज वर्षों का सत्संकल्प इनकी उत्कट उत्कंठा से साधन हीन अवस्था में भी अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक प्राण प्रीतम प्रभु राज राजेश्वर सर्वेश्वर श्रीराघवेन्द्र जू की प्राण वल्लभा श्रीमज्जनकराज किशोरी श्री सिया स्वामिनी जू की असीम अनुकम्पा से "सीताराम वर्षोत्सव" के रूप में साकार बन सका। इसमें अनन्त श्री अग्रस्वामीजी महाराज, गोस्वामी तुलसीदासजी, श्रीराम सखेजी, श्रीकृपा निवासजी, श्रीरामचरण दासजी, श्रीयुगल प्रियाजी, श्रीरसिकअलीजी, श्रीयुगलानन्य

शरणजी महाराज आदि परम रसिकाचार्यों की प्रत्यक्ष अनुभूत महावाणियों का संग्रह है। अतएव, ये शतशः धन्यवादार्ह हैं। कहा ही है–

'संत विटप सरिता गिरि धरनी।
परहित हेतु सबनि की करनी।।'

रसिक शालि जलधर स्वामी श्रीसीताराम शरण जी महाराज (वर्तमान श्री लक्ष्मण किलाधीश, अयोध्या) के चरणों में सहस्त्रशः प्रणिपात है जिनकी कृपा से इसमें अधिक सहयोग प्राप्त हुआ है और जो वर्तमान रसिक समाज के कल्पतरु हैं।

श्रीराम अधार दास जी, शास्त्री ने प्रेस कापी प्रस्तुत करने में अधिक श्रम करके बड़ा सहयोग किया तदर्थ ये विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।

अयोध्या गोलाघाट स्थित श्रीरसमोद कुँज के निर्माता रसिक मौलिमणि विरौली वाले स्वामी श्रीशत्रुहन शरणजी महाराज ने एक समृद्ध पुस्तकालय सजा रक्खा है जिसमें

शृङ्गार रस रसिक रसिकाचार्यों की महावाणियों का विशाल संग्रह है। महाराज श्री के निर्देश से महात्मा श्री वैदेहीवल्लभ शरणजी ने इस संग्रह में से प्रस्तुत ग्रन्थ अपने श्री 'सीताराम वर्षोत्सव' में अधिकांश पद लिये हैं।

अतएव, प्रातः स्मरणीय पूज्य चरण दिवंगत महाराज श्री के चरणों में हम सबों के कोटिशः नमन है। तच्चरण चंचरीक अवधेश वस्त्रालय वाले श्रीवैदेहीशरणजी (जानसठ) भी इस ग्रन्थ के प्रकाशन में अधिक सहयोग के लिये धन्यवादार्ह हैं।

अयोध्या श्री लक्ष्मण किले की आचार्य गादी चिरान (छपरा) के वर्तमान पीठाधिपति स्वर्ण पदक प्राप्त स्वामी श्री मैथिली शरणजी महाराज, शास्त्री के निर्देश से इस ग्रन्थ रत्न के संग्रह में महात्मा श्री वैदेही वल्लभ शरण जी को अधिक सहायता मिली। अतएव, आचार्य चरणों के स्मरण में कोटिशः प्रणिपात सब विधि योग्य है।

"श्री श्याम आफसेट प्रिंटर्स" ने सावधानी से मनोयोग पूर्वक इसे मुद्रित करने में सहयोग किया है तदर्थ यह भी धन्यवादार्ह हैं। और भी इस कार्य में जिनसे जो सहयोग बन बड़ा तदर्थ वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

प्रूफ संशोधन का भार श्रीमहाराजजी ने मेरे ऊपर दिया जिसको कई कारणों से मैं अच्छी तरह वहन नहीं कर सका। मेरी अल्पज्ञता ही इसमें प्रधान कारण समझना चाहिये जिसके लिये मैं सबों से क्षमा प्रार्थी हूँ।

अन्त में, मैं अखिल ब्रह्माण्डाधीश्वरी श्रीमज्जनक नन्दिनी श्री रामप्रिया जू के चरण कमलों में शतशः प्रणिपात करता हुआ इनकी कृपा पर बलिहार जाता हूँ कि जिनकी असीम कृपा से यह दुरूह कार्य सम्पन्न हो सका।

रसिकों का अनुचरा–

अनन्त श्री रसमोद पादारविन्द मिलिन्द

श्याम वल्लभा शरण

❀ श्री सद्गुरवे नमः ❀

॥ श्रीराम जन्म बधाई ॥

-: मङ्गल पद १ :-

सब मिलि आवो री सजनी, मंगल गाइये ॥
रानी कौशिल्या के भए सुत, वेगि बधावो जाइये ।
आजु कैसो दिवस सजनी, बडे भागन पाइये ॥
घसि चारु चन्दन लीपि आँगन, मोतिन चौक पुराइये ।
सात सींक सँवारि सथियाँ, वन्दनवार बँधाइये ॥
ललन मुख लखि लेउँ बलैया, नैनन हियो सिराइये ।
प्राण सर्वस वारने करि, फुली अँगन माइये ॥
हिय हुती सो दृगन देखी, भयो सबन्हि मन भाइये ।
'हितअनूप' हमार जीवन, बिधना तू चिर जाइये ॥

पद २

नृप दशरथ के पुत्र भयो, सुर पुर में बजत बधाई री ॥
घर घर मगलचार अवधपुर, बंदन वार बधाई री ।
चतुर सखी मिलि सथियां दीने, विधि सों सींक भराई री॥
चन्दन चौक रच्यौ आँगन में, रतननि भूमि गराई री ।
करत कौतुहल कौशलपुर वासी, याचक अभरन पाई री ॥
केतक कलश धेनु संकल्पी, हस्ति समूह लुटाई री ।
"अग्रअली" रघुपति के जनमत, मन वाँछित फल पाई री॥

पद ३

आजु सुदिन सुभ घरी सुहाई, काह कहों अधिकाई ।
रूप शील गुन धाम राम नृप, भवन प्रगट भय आई ।।१
अति पुनीत मधुमास लगन ग्रह, वार जोग समुदाई ।
हरषवन्त चर अचर भूमिसुर, तनरुह पुलक जनाई ।।२
बरषहिं विवुध निकर कुसुमावलि, नभ दुन्दुभी बजाई ।
कौशल्यादि मातु मन हरषित, यह सुख बरनि न जाई ।। ३
सुनि दशरथ सुत जनम लिए सब, गुरु जन विप्र बोलाई ।
वेदविहित करिक्रिया परम सुचि, आनन्द उर न समाई।।४
सदन वेद धुनि करत मधुर मुनि, बहुविधि बाज वधाई।
पुरवासिन प्रिय नाथ हेतु, निज निज सम्पदा लुटाई ।।५
मनि तोरन बहु केत पताकनि, पुरी रुचिर छवि छाई ।
मागध सूत द्वार बन्दीजन, जहँ तहँ करत बड़ाई ।।६
सहज सिंगार किये बनिता चली, मंगल बिपुल बनाई ।
गाँवहिं देहि असीस मुदित, चिर जिवौ तनय सुखदाई ।।७
बीथिन कुँकुम कीच अरगजा, अगर अबीर उड़ाई ।
नाचहिं पुर नर नारि प्रेम भरि, देह दसा विसराई ।।८
अमित धेनु गज तुरग वसन मनि, जात रूप अधिकाई ।
देत भूप अनुरूप जाहि जोइ, सकल सिद्ध गृह आई ।।९
सुखी भए सुर सन्त भूमि सुर, खलगन मन मलिनाई ।
सबै सुमन विकसत रवि निकसत, कुमुद विपिन विलखाई।१०

जो सुख सिन्धु सकृत सीकरते, सिव विरंचि प्रभुताई ।
सोइ सुख अवध उमंगि रह्यो दसदिसि, कौन जतन कहोंगाई
जे रघुवीर चरन चिंतक, तिनकी गति प्रगट दिखाई ।
अविरल अमल अनूप भगति दृढ़, 'तुलसीदास' तब पाई।।२१

पद ४

सोहिलो, सोहिलो, सोहिलो, सोहिलो सब जग आज ।
पूत सपूत कौसिला जायो, अचल भयो कुलराज ।।१।।
चैत चारु नौमी तिथि सित पख, मध्य दिवस गत भानु ।
नषत जोग ग्रह लगन भले दिन, मंगल मोद निधानु ।।२।।
ब्योम, पवन, पावक, जल, दिसि दसहु सुमंगल मूल ।
सुर दुन्दुभी बजावहिं गावहि, हरषहि बरषहिं फूल ।।३।
भूपति सदन सोहिलो सुनि, बाजै गह गहे निसान ।
जहँ तहँ सजहिं कलस ध्वज, चामर केतु वितान ।।४।।
सींचि सुगंध रचै चौके गृह, आँगन गली बजार ।
दल फल फूल दूब दधि रोचन,घर-घर मंगल चार ।।५।।
सुनि सानन्द उठे दसस्यन्दन, सकल समाज समेत ।
लिए बोलि गुरुसचिव भूमिसुर,प्रमुदित चले निकेत ।।६।।
जात करम करि पूजि पितर सुर,दिए महि देवन दान ।
तेहि अवसर सुत तीनि प्रगट भये, मंगल मुद कल्यान ।।७।
आनन्द मँह आनन्द अवध, आनन्द बधावन होइ ।
उपमा कहौं चारि फल की मोहि, भलो न कहै कवि कोइ।।८।

सजि आरती विचित्र थार कर, जूथ–जूथ वर नारि ।
'गावत चलीं बधावन लै लै, निज निज कुल अनुहारि ।।९
असही दुसही मरहु मनहि मन, बैरिन बढ़हु विषाद ।
नृप सुत चारि चारु चिरजीवहु, संकर गौरी प्रसाद ।।१०

पद ५

आजु नगारे की धुनि सजनी, औरे रंग अवाजेरी ।
नृप के द्वार बजत निशिवासर, आजु अधिक सुख साजे री ।।
पूरे दिनन भई नृपरानी, जो कहुँ ईस निवाजे री ।
होइ पुत्र पंक्तीरथजू के, पूजे सब मन काजे री ।।
इतने में कोउ आन कही नृप द्वार बधाई बाजें री ।
'रसिकअली' लखि मोद मगन मन, तन रोमावलि राजें री।।

पद ६

आजु महामंगल कौसलपुर, सुनि नृप के सुत चारि भए ।
सदन सदन सोहिलो सोहावनो, नभ अरु नगर निशान हए ।।
सजि-सजि जान अमर किन्नरमुनि, जानि समय सम गान ठए।
नाचहिं नभ अपसरा मुदित मन,पुनि पुनि बरषहिं सुमन चए।
अति सुख वेगि बोलि गुरु भूसुर, भूपति भीतर भवन गए ।
जात करम करि कनक वसन मनि,भूषित सुरभि समूह दए ।।
दल फल फूल दूब दधि रोचन, जुवतिन भरि भरि थार लए ।
गावत चलीं भीर भइ बीथिन, बन्दिन बाँकुरे विरद बए ।।

कनक कलस चामर पताक ध्वज, जँह् तहँ बंदनवार नए ।
भरहिं अबीर अरगजा छिरकहिं, सकल लोक एक रंग रए ।।
उमगि चल्यौ आनन्द लोक तिहुँ, देत सबनि मन्दिर रितए ।
'तुलसिदास' पुनि भरोइ देखियत, रामकृपा चितवनि चितए।

पद ७

कौशिल्या के राम जनम लियों, देखहु नयन अघाई ।
सब नर नारि सुमंगल गावहिं, नाचहिं ताल बजाई ।।१।।
कूदहिं करहिं कलोल परस्पर, अतर अबीर उड़ाई ।
लाल भयो सरयू जल शोभित, गलियन कीच मचाई ।।२।।
वरषहि सुमन बजावहिं नाचहि, देव विमान बिहाई ।
अवधपुरी में मंगल घर घर, लखि ब्रह्मादि सिहाई ।।३।।
अवध पुरी सब लोक एक भयो, मंगल तिहु पुर छाई ।
कोटि काम छबि लखि दशरथ सुत, 'राम चरन' वलि जाई ।।४।।

पद ८

धनि धनि चैत महिनवाँ की सुघर समैया हो ।
रामा प्रगट भए रघुरैया, परम सुख दैया हो ।।१।।
धनि धनि अवध नृपति वर, प्रभु प्रगटावहि हो ।
रामा,धनि धनि अम्ब कौशिल्यई दिवस दिखावहिं हो।।२।।
जो सुख दूर्लभ ब्रह्मादिकन सब देवहि हो ।
रामा, अवध नगर के बसैया सहजहीं में पावहिं हो ।।३।।
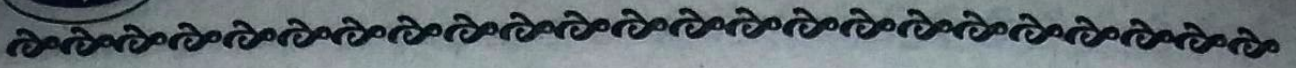
द्वारे बाजे बधावा महल बिच सोहर हो ।
रामा, सोभित रानी जू के गोद ललन जू मनोहर हो ।।४।।
आरति करहि युवति जन मंगल गावहि हो ।
रामा, 'सिया अली' जीवन धन लखि सुख पावहिं हो ।।५।।

पद ६

वरष गाँठ प्रिय लालको बाल मनावहिं हो ।
ललना, जुरि जुरि सखिन समाज सोहिलो गावहि हो ।१।
मधुरितु अति सुख पाय छाय पुर देशहिं हों ।
ललना, कामिनि हिय नवराग सुकरत प्रवेशहिं हो ।।२।।
प्रमदावन विकसंत कंत रितुराजहिं हो ।
ललना, प्रफुलित वनिता वृन्द साज शुभ साजहि हो ।।३।।
फूलन बन्दनवार द्वार प्रति बाँधहि हो ।
ललना, फूलन चौक पुराय वितान तनावहि हो ।।४।।
फूलन केतु पताक साथियाँ फूलहिं हो ।
ललना, फूलन साज समाज देखि मन भूलहिं हो ।।५।।
फूल सिंगार सँवारि नारि युग लालहिं हो ।
ललना फूलन डोल सजाय तहाँ पधरावहिं हो ।।६।।
फूली ललना ललित कलित गुन गावहि हो ।
ललना, नाचि नाचि सुख राँचि सु ललन झुलावहि हो।७।
"कान्ति लता" तहँ फूलि पाय रसमोदहिं हो ।
ललना, लालन रही रिझाय समाय विनोदहिं हो ।।८।।

पद १०

मंगलमय प्रभु जनम समय में, अति उत्तम दश योग परे।
अपने अपने नाम सदृश फल, दशौ जनावत खरे खरे ।।१।
ऋतुपति ऋतु पुनि आदिमास मधु,शुक्लपक्ष नितधर्म भरे।
अंक अवधि नौमी शशि वासर, नखत पुनर्वसु प्रकृति चरे।२
योग सुकर्म समय मध्यमदिन, रवि प्रताप जहँ अति पसरे।
जय दाता अभिजित मुहूर्तवर, परम उच्च ग्रह पाँच ढरे।३।
नौमि पुनर्वसु परम उच्च रवि, कबहुँन तीनिउ संग अरे।
एहिते 'देव' रूप कछु लखिये, गाय-गाय गुन पतित तरे।४।

पद ११

सजनी आज भयो मन भायो।
भाग को भाजन रानी कौशिल्या सुघर सलोनो जायो।१।
हमहूँ भई अब भाग को भाजन, दैहौ जाइ बधावो ।।२।।
चलिये बेगि विलम्ब न कीजै, अब नहि परत रहायो।
देखिय मंगलमय मुख सुत को, उर उछाह अधिकायों ।।३।।
करि आरति तन, मन, धन वारिये, जानिय लाखो पायो।
यूथ यूथ मिलि चली सु नारिन, करमें मंगलथार सुहायो।४
बहुत दिनन ते मनावत विधिको, आज दाहिने आयो।
पूजे देव गनेश भवानी, आजु सोई फल पायो ।।५।।
कोउ सजत कोउ जात चली मग, परत उताइल पायो।५।
पुरवासी, परिजन, सेवकजन, भयो सबको चित चायो।
'रसिकअली' नाते सुख सबको, पुरुषतिया श्रुति गायो।७।
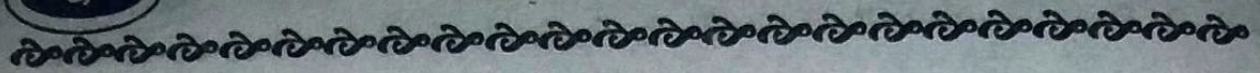
पद १२

आज उनमादियाँ वे बधैया देत श्री भूपाल ।
जायो सुत राम लौना हो सलोना श्यामला अरुलाल ।।
रावल शादियाँ हो करै, सहजादियाँ कुलरीत ।
वारैं लोन राई हो सखी, सब गावैं मंगल गीत ।।
सखी सब मंगल गावै, गुनि मिल चूहल मचावै ।
बजावैं डिमक झाँझा, मजे से गावत माझा ।।
लाल के सद के जाऊँ, कुंवर पर घोल घुमाऊँ ।
निशदिन लेऊ बलैयां हो, बड़े खाड़ेश सुन्दर जाय ।
रहो नित रंग रलियां हो, लड़ायो लाल दशरथ लाल ।।
करो दिन रात जापा हो, खशीदे खास दे खुलवाय ।
खुलाया खास खजांना, लुटाया माल अमाना ।।
भरे पुनि भये न रीते, गुनी सब भये निचीते ।
फिर वे कहूं न नच्चे, वृजनहूँ से सच्चे ।।

पद १३

बधाई अवधेश के बाजै । मनो घन गहे गहे गाजै ।।
गुनी गन्धर्व जुरि आये । दान मन भांवते पाये ।।
मलिनियाँ माल गुहि लाई । नाइनी हरी दूब बँधवाई ।।
सुवासिनी सोहिलो गावैं । लला के वारने जावै ।।
सखी सथियाँ सँवारे री । विरद बंदी उचारे री ।।
पढ़त द्विज बेद वर वानी । धन्य महाराज महरानी ।।

यह छवि देखि सब हरषैं। सुमन बहु व्योम ते वरषें ॥
असीसैं देत नर नारी। 'रसिक गोबिन्द' बलिहारी ॥

पद १५

चलो सखी हरष तावल में। भये सुत राज रावलमें ॥
मगन रस हँसत खेलो री। गावोंगौ राम सुहेलो री ॥
सजोरी साज स्वाँगन में। नाचौंगी राय आँगन में ॥
करौंगी प्रेम की सैलैं। उघारे आजु मन फैलें ॥
परै सुखसिन्धु में गहरें। उठें जहँ रंग की लहरें।
बढ़े अनुराग झूलैं री। खुशी के बाग फूलैं री ॥
लखों री प्राण पालन को। खेलावो गोद लालन को।
'कृपानिवास' के प्यारे। अवधपुर राय के वारे ॥

पद १६

सुनो री नौवतें बाजें। मनो सावन के घन गाजैं।
नचैं पुर सुघर कामिनि सी। दमक तनु चपल दामिनि सी
बनी छवि धूप धूमन की। मनो घटा श्यामलु वन की।
बरसि सुर सुमन मन मोहैं। सुभग बगमाल सी सोहैं।
खुशी के वरष पानी री। हरे जहँ राय रानी री ॥
भरे मन रसिक सागर से। उपासक राम नागर से ॥
बढ़ी अब प्रीति की नदियाँ। उखर बहि कूल फुलवगियाँ ॥
'कृपानिवास' मन मछियाँ। अवध पुर सादियाँ अछियाँ ॥

पद १७

चलायो रानी परमेश्वर पर टोना ।।
वेद न गायो पार ना पायो जायो श्याम सलोना।
योगी योग साधना हेरैं तेरे खेल खेलौना ।।
भयो नहीं ना होइहै काहू के बिना प्रेम कहँ होना।
'कृपानिवास' सनेहिन के बस कौशिल्या जू के छौना ।।

पद १८

बधाई बाज रही, हेरो हेरो अवध उत्साह ।।
होत हजारन हरष हिये शुभ सदन सदन चित चाह ।
दुति दामिनि भामिनि गावै गुन भरि भरि रंग उछाह ।।
कोइ काहू की सुधि न सम्हारत छकि छकि नाह निगाह।
'युगल अनन्य अली' हुलसत उर दुरत दरद दिल दाह ।।

पद १९

पियपुर चहुँओर, बाजे रसीली बधावनियाँ ।
नौमी तिथि मधुमास मनोरम मंगल दिन छबि छावनियाँ
श्री रघुराज सुवन मोहन मन प्रगटे भूमि सोहावनियाँ
'युगलअनन्यशरण' रसिकन की, भली भाँति भई भावनियाँ

पद २०

लैहों नेग में कर को कँगनवाँ ।।
महरानी विनती सुनु मोरी, सुखी रहैं तेरो चारो ललनवाँ
रामलला के निछावर लैहों, और कछु नहिं मोहि चहनवाँ

गाय बजाय रिझाय मजे से ढ़ाढ़िन मचली भूप अंगनवा ।
'मधुरअली' हँसि देत निछावर, राममातु मन मोद मगनवाँ ।।

पद २१

न लैहौं महरानी जू कर कंगनां ।
बहुत दिनन की आस लगी है सो दिन पहुँची आनी जू ।
राम लला को निछावर लैहौं जो हमरे मन मानी जू ।।
गले को हार कौशिल्या रानी दीन्ही तब ढाढ़िन मुसुकानी जू ।
रामदास की आस यही है महल टहल मनमानी जू ।।

पद २२

बाजत आनन्द बधैया हो रामा अवध नगर में ।
राजा दशरथजीके चारि पुत्र भये श्याम गौर छवि छइया ।।
राम लखन श्री भरत शत्रुहन नाम ललित सुख दइया हो ।
त्रिभुवन में उत्साह भयउ अति 'प्रेम मोद' अधिकइया हो ।।

पद २३

आँगने में बधैया बाजे ।।
चन्द्र मुखी मृगनयनी अवध को तोरत तानन रागने में ।
प्रेम भरी प्रमदा गन नाचें नूपुर बाँधे पांयने में ।।
न्यौछावर श्री रामलला जू को नहिं कोउ लाजत मांगने में ।
'सिया अली' यह कौतुक देखत बीती रजनी जागने में ।।

पद २४

चलो री सब देखि आवें, बाजत बधैया ।।
कौशिल्या सुख सुकृत सिन्धु से राम चन्द्र प्रगटैया ।
हर्ष हिलोर उमगि दशदिशि में अग जग मगन करैया ।।

अति पुनीत मधुमास लगन ग्रह योग, वार समुदैया ।
मध्य दिवस में प्रकट भये है सबहिन के सुखदैया ।।
सुनि दशरथ नृप खोलि खजाने मंगन नृपति करैया ।
लाल निछांवर वसन लुटावहि भूषण मणिन जरैया ।।
सदन सदन से चली सुहागिन मंगल थाल सजैया ।
गावहिं गलिन लाज बिसरावहिं, नाचत ताताथैया ।।
शिशु मुख निरखि हरषि तृण तोरति कोइ सखि लेत बलैया ।
ललन 'कान्ति' दश दिशा प्रकाशित मानो फैलि जोन्हैया ।।

पद २५

कौशिल्या मैया चिरजीवे तेरो छौना ।

राज समाज सकल सुख सम्पति अधिक अधिक नित होना ।
मुनि जन ध्यान धरत निशि वासर अमित जनम धरि मौना ।।
'रतनहरी' प्रभु त्रिभुवन नायक तैं कर लियो खिलौना ।।

पद २६

महल में सोहिलो गावैं । सखी सब मोद उपजावैं ।।
ललन की बाल छबि निरखैं । सुधन पट वारिमन हरसैं ।।
सराहैं भाग दम्पति को । जो पाई ऐसी सम्पति को ।
दुआरे नौबते बाजैं । नगर में छाई आवाजैं ।।
ग्राम की नारि सुनि धाई । रावले माँझ जुरि आई ।।
बढ़ेउ सुख सिन्धु चहुँ ओरी । 'प्रेम रस मोद' को बोरी ।।

पद २७

महराजा अवधेश के सुनु सोहिलोरा ।

बजत बधाई आज मेरा मन मोहिलोरा ।।

जनमें पुत्र सुपुत्र हैं सुनु० । अचल भयो कुलराज मेरा० ।।
नृपति दान बहुतेक दिये सुनु०। गउवें अरुगज वाजि मेरा० ।।
मालिनियाँ आजु फूली फिरैं० । वाँधति बन्दनवार मेरा० ।।
धरति सुआसिनि साथियाँ सुनु० । गावति मंगलचार मेरा०।।
'कृपानिवास' को दीजिये सुनु०। महरानी गरे को हार मेरा०।।

पद २८

सदा शुभ होवै जनम की घड़ी ।।

माई कौशिल्या की कोख सिरानी गोद खेलावें मोद भरी ।
राजा लुटावें अन धन सोनमां,रानी लुटावें मोतियन की लड़ी।।
द्वार द्वार प्रति नौबत बाजे मालिनियाँ लिये माल खड़ी ।
सुर नर मुनि जय जय कार करतु हैं'मस्त'करत फुलवनकी झड़ी।

पद २९

चलो री सखि देखि आवैं, प्यारे रघुरैया ।।

घर घर वन्दन वार पताका वरनि न जाय निकैया ।
पुर नर नारि मगन होय गावैं घर घर बजत बधैया ।।
राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन सुन्दर चारो भैया ।
कौशिल्या कैकेयी सुमित्रा पुनि पुनि लेत बलैया ।।
सुर नर मुनि जय जय कार करत हैं,बरषत सुमन निकैया ।
श्री दशरथ जू के आँगन ठाढ़े, नाचें 'मस्त' गवैया ।।

पद ३०

सब मोद मनावैं मन में, राजन गृह लालन जनमें।
अनमोल रतन बिछे भूमि रहे, हीरन के तोरन झूमि रहे,
मनि मोती जड़े कलशन में ।। राजन०
नर नारी आवतु जावतु हैं, मनि मानिक लाल लुटावतु हैं,
सब धनपति ह्वै रहे धन में ।। राजन०
फूलन की मगमग महक मची, ऋतु पति ने रचना रुचिर रची,
बागन बागन बन बन में ।। राजन०
दइ आज्ञा अवध बिहारी ने, पायो अधिकार बिहारी ने,
अब चित्त लगो चरनन में ।। राजन०

पद ३१

बधाई बाजि रही घन घोर।
दशस्यन्दन के चार सुवन भये दुइ श्यामल दुइ गोर ।।
महल महल प्रति नौबत बाजे, मच्चो अनन्द को शोर।
चन्द्र मुखी मृगनयनी गावें जस कोकिल बन मोर ।।
पुर वासिन की दशा बिसरि गई, नहिं जानत निशिभोर।
'सियाअली' श्री अवध नगर में, रहि गयो मोर न तोर।

पद ३२

आज समय सुखकारी हो रामा बाजी बधाई।
प्रगट भये प्राणन के प्यारे,
छाय रही सुख भारी ।।हो रामा०

हिल मिल चलू सजनी राजभवन को,

लूटहुँ आनन्द सारी ।।हो रामा०

धन्य अवध धनि अम्ब कौशिल्या,

जहाँ प्रगटे सुखकारी ।।हो रामा०

'सियाअली' तन मन धन वारिये,

निरखत अवध बिहारी ।।हो रामा०

पद ३३

आज सखी चहुँ ओरवा हो रामा नौबत बाजैं ।।

अवध नगर सब डगर-डगर में मंगल गान के शोरवा हो।

वेगि चलो री मिलि जुरि सजनी राजमहल की ओरवा हो।

प्रगट भये त्रिभुवन जीवन धन शोभित रानीजू के कोरवा हो

'सियाअली'छवि लखि नाचन लागी ज्यों घनलखि मोरवाहो

पद ३४

लखि–लखि वारे ललनवाँ हो रामा अँखियाँ सुफल भई ।।

घुँघरारी काली कालि जुलुफिया शोभित कमल नयनवाँ हो

किलकि रहे रानी जू कोरवा भावत मन्द हँसनवाँ हो ।।

धनि-धनि भाग हमार कि सजनी चुभती मन को हरनवाँ हो

'सियाअली' अब नित हम अइबै देखन सुख के सदनवाँ हो।

पद ३५

बरसि रहे आनन्द अवध में जेहि सुख को तरसि रही ।।

जेहि सुख को चातक यह अँखियाँ बहुत दिन से तरसि रही।

प्रगट भये सोई राजदुलारे चलि देखिये नृप महल सही ।।
हरषित भई सखी आम लता हियपाय महारस विहँसि रही
'सियाअली' लखि-२ प्यारी छवि अंग अंग सुख बरसि रही ।

पद ३६

आज भयी मनभायी अम्ब मोहि दीजै बधाई ।।
त्रिभुवन सम्पति गोद तीहारी सर्वसु देहु लुटाई ।।
बहुत दिनन पै भाग जगी है लैहों नेग आज मनभाई ।
मोतिन हार मातु निज गर की देहुँ हमें पहिराई ।।
चिरजीवैं तेरो चारो ललनवाँ भोगहुँ सुख अधिकाई ।
'सियाअली' प्यारो मुख चूमति पुनि पुनि लेत बलाई ।।

पद ३७

रानी लैबो निछावरि आज राजदुलारे की ।।
पुत्र जन्म सुनि हम सब धाई तजि गृह के सब काज ।
लखन छवि वारे की……
गाय बजाय सुनाचि देखइबो मंगबो तजि सब लाज ।।
अवध नृप वारे की…
जड़ीदार लहंगा लेबैं अलिया अंगिया बूटे जड़ी की साज ।
जोड़ गलहारे की…
'सियाअली' युग जुग जीवें लालन नित प्रति बाढ़ैं राज ।।
अवध दरबारे की…

पद ३८

देखो देखो नृपति द्वार बधइया बाजि रही।
सुन्दर सुत महारानी जायो अवध कियो उजियार।
मृगनैनी पिकबैनी मिलि मिलि गावत मंगलचार॥
हेलि चलो सब राजभवन को लूटहुँ सुषमासार।
'सियाअली' लालन छवि लखिलखि प्राण करौं बलिहार।

पद ३९

निरखु सखी बाजत आनन्द बधाई॥
लूटहुँ आज अमित सुख आली प्रगटे हिय सुखदाई।
चलि लीजै दोउ लोचन फल शोभा श्री रघुराई॥
धन्य आज को दिवस सखि री धन्य कोशिल्या माई।
'सियाअली' प्यारी अँखियन को जो यह सुख बरसाई॥

पद ४०

आज समय सुखकारी हो रामा बाजी बधाई॥
प्रगट भये प्राणन के प्यारे छाय रही सुखदाई हो रामा।
मिलि सजनि चलु राजमहलको लूटहुँ आनन्द सारीहो रामा
धन्यअवधधनि अम्बकोशिल्या जहँ प्रगटे सुखकारीहो रामा
'सियाअली' तनमन धनवारिये निरखतअवधबिहारीहो राम

पद ४१

बाजत आनन्द बधइया हो रामा अवध नगरिया।
बहुत दिनन की आस मनन को;
विधिना आज पुजइया हो रामा।

प्रगट भये महाराज महल में,
त्रिभुवन के सुखदइया हो रामा ॥
कोई नाचति कोई गावति हिलि मिलि,
प्रमुदित लोग लुगइया हो रामा ।
'सियाअली' के ये प्राण निछावरि,
निरखत मुख रघुरइया हो रामा ॥

पद ४२

दीजै रानी बधाई ललन की ।
बहुत दिनन से आस हमारी आज भई मनभाई ॥
पायो तुम त्रिभुवन की सम्पत्ति दीजै मोहि बधाई ।
बड़ भागन मांगन दिन आयो दीजै चित हरषाई ॥
नित खेलें मम उर आंगन में तेरो लला रघुराई ।
'सियाअली' याहि धन मांगति दीजै आज पुराई ॥

पद ४३

प्यारी बाजी रहि आनन्द बधइया हो रामा ।
त्रिभुवन सुखमा सुनु सजनि नृप घर राजि रही ॥
मंगल गान करहिं सब युवती मंगल साजि रही ।
'सियाअली' लालन छवि निरखहिं दृग बीच आजि रही ।

छठी पद ४४

आई छठी दिन आज रजनी प्यारी सखी ।
मंगल गान चहुं दिशि छाई लागी नौबति बाज ॥रजनी॰

वेगि चलो री राजमहल को लै लै आरति साज ।।रजनी०

पूजत छठी गोद लै लालन रानी युत महाराज ।।रजनी०

पीत वसन लालन तन शोभित भाग दिठौना भ्राज ।।रजनी०

'सियाअली' तह् कमल नयन में दीनों काजर आँख ।।रजनी०

पद ४५

नृपति घर सोहै चारों ललनवाँ ।।

बहुत दिनन पर महाराज के जागे भाग फलनवाँ ।।

द्वै गोरे सखी अति मन भावत द्वै छवि श्याम वरनवाँ ।।

लखि ले उरि यह सुन्दर जोड़ी झूलत हेम पलनवाँ ।।

'सियाअली' महाराज महल में बरसत सुख की खनवाँ ।

पद ४६

पालने में झूलत रघुरईया ।।

मातु झुलावति हिय हुलसावति निरखति मुख सुख दइया ।

हिय लगाय कबहुँ पयप्यावति कबहुं लेति बलइया ।।

कबहुँ चुटकी बजाय बुलावति कबहुँ गावति मईया ।

'सियाअली' धनि अम्ब कोशिल्या जिन यह सुख बरसईया

सोहर पद ४७

अवध नगरिया सोहैया आनन्द बरसइया हो ।

रामा धनि यह सुखद समइयां रघुरइया आजु जनमे हो ।

सुखदइया आज जनमले हो ।

हिलि मिलि चलों री सहेलिया राजा के महलिया हो ।

हमरे राजा जी के बाजेला बधइया रघुरइया हो।
आजु जनमे सुरसइय्या हो।
देव सुमन बरसइया वा दुन्दुभी बजइया हो रामा,
प्रमुदित लोग लुगइया रमैय्या आज जनमे सुखदइया, आजु·
गावहिं गान गवइया नाचहिं थेइया थेइया हो।
रामा रानीजी के गोदिया सोहइया रघुरइया, आजु···
छवि पर बलि बलि जइया ललन सुघरइया हो।
रामा 'सियाअली' हिय के बरसइया रघुरइया,
आजु जनमले हो···

पद ४८

आँगने में बधैया बाजे।
चन्द्रमुखी मृग नयनी अवध की तोरत तानन रागने में।
प्रेम भरी प्रमदागण नाचें नूपुर बाँधे पायने में॥
न्योछावर श्रीरामललाजू को नहि कोउ लाजत माँगने में।
'सियाअली' यह कौतुक देखत बीती रजनी जागने में॥

पद ४९

सुभग सेज शोभित कौशिल्या रुचिर राम शिशु गोद लिये।
बार बार बिधु बदन बिलोकति लोचन चारु चकोर किये।
कबहुँ पौढ़ि पय पान करावति कबहूं राखति लाइ हिये।
बालकेलि गावति हलरावति पुलकित प्रेम पियूष पिये॥
बिधि महेश मुनि सुर सिहात सब देखत अम्बुद ओट दिये।
तुलसीदास ऐसो सुख रघुपति पै काहू तो पायो न बिये॥

पद ५०

चिरजीवी रहैं नृप चारिउ लला ।
बाल चरित करि सुख बरसावहिं,
ब्याह होंहि शृङ्गार थला ।।
जग विजयी होइ राज सिंहासन,
बैठहिं सबको होय भला ।
'प्रेममोद' सम्बन्ध जनित सुख,
चाहत अचल न और कला ।।

रेखता पद ५१

महल में सोहिलो गावें । सखी सब मोद उपजावें ।
ललन की बाल छवि निरखें । सुधन पट वारि मन हरषें।
सराहैं भाग दंपति को । जो पाई ऐसी संपति को ।।
दुवारे नौबतें बाजें । नगर में छाई आवाजें ।।
ग्राम की नारि सुनि धाई । रावले माँझ जुरि आई ।
बढ़यो सुख सिंधु चहुँ ओरी । प्रेम रसमोद को बोरी ।।

॥ श्रीजानकी जन्म बधाई ॥

❁ मङ्गल पद १ ❁

मंगल गावो री हेली, मन के भावने ।
मिथिलापति केरी हेली, शंकर दाहिने ॥
छन्द–दाहिने विधि शम्भु अमृत वरषिये वर्षा भली ।
जनक सुकृत भरे सागर सीय पंकज की कली ॥
प्रफुल ह्वै दिन बढ़ो सुयश निवास कीरति सँग चली।
अवध बन ते भँवर आवैं राम रसिया वर लली ॥१
मंगल गावो री हेली, दिन दिन चौगुने ।
भाग सिहाओ री हेली, सब मिल आपने ॥
छन्द–आपने बड़ भाग जानो लागि सिय पद सब रहैं ।
जानि अपनी बालपन ते वर मिले बहियाँ गहैं ॥
यह संग सब दिन सुलभ सजनी लली सेवन जो चहैं ।
बढ़ो सरस सुहाग स्वामिनि सहचरी पद हम लहैं ॥२
महिमा गावो री हेली, सुनैना भाग की ।
उमही है री हेली, वेलि सुहाग की ॥
ताही दिन ते जनकपुरी में गृह गृह सम्पति आई री।
द्वार द्वार बन्दनवारे अनगन आनन्द छाई री ॥२॥
चढ़ि विमान सुर कौतुक देखहिं नभ दुन्दुभी बजाई री ।

छन्द–उमही सुबेलि सुहाग की बर वाम कोखि सुहावनी ।
अनुराग जल सों लागि पाल्यो सुरति मालिनि भावनी।।
यह चाह टेक बढ़ाइ मूरति लता ललित लुभावनी ।
फूल ह्वैकरि माल दशरथ लाल गर पहिरावनी ।। ३
चौक पुरावो री हेली, सोहिलो गाइये ।
जनम लख्यो है री हेली, ब्याह मनाइये ।।

छन्द–उर चाह धरिये ब्याह की बर राम आवें पाहुने ।
यह लाहु हमको भूप प्रण हित शम्भु चाप तुरावने ।।
सिय राम मण्डप ललित भाँवरि समय सरस सोहावने
यह आस 'कृपानिवास' उर की विपुल मंगल गावने।४

पद २

अखिल लोक श्री उदय भई है जनक रायपुर जाई ।
निरवोपम कन्या निलिकुल की सीता ऐसन नाई ।।१।।
वरनत विदुष पार नहिं पावत वानी रही लजाई ।
जाके चरन कमल भव नौका नाहिन आन उपाई ।।२।।
निगम सार सामान सुयश जाको कहत तपोधन आई ।
ब्रह्म रुद्र अजहूँ पद आश्रित 'अग्रअली' बलि जाई ।।३।।

पद ३

आजु महामंगल मिथिलापुर घर घर बजत बधाई री ।
कुँवरि किशोरी प्रकट भई है सबहिन की सुखदाई री ।।१।।

ताही दिन ते जनकपुरी में गृह-गृह सम्पति आई री ।
द्वारे–द्वारे बन्दनवारे अनगन आनन्द छाई री ।।२।।
चढ़ि विमान सुर कौतुक देखहिं नभ दुन्दुभी बजाई री ।
जनकलली को सोहिलो गावत पुष्प वृष्टि झरि लाई री ।।३।।
सुन्दर श्याम राम की प्यारी शोभा अधिक सुहाई री ।
'तुलसीदास' बलिहारी छबि पर भक्ति बधाई पाई री ।।४।।

पद ४

जा दिन सीता जन्म भयो ।
ता दिन ते सबही लोगनि के मन को शूल गयो ।।१।।
अघ्वर आदि अवनि ते उपजी दिवि दुन्दुभी बजाये ।
वरषत कुसुम अपार शब्द जय व्योम विमानन छाये ।।२।।
जनक सुता दीपक कुल मण्डन सकल सिरोमनि नारी ।
रावन मृत्यु मुकुति अमरन गन अभय दान भयहारी ।।३।।
सुन्दर शील सुहाग भाग की महिमा कहत न आवै ।
परम उदार राम की प्यारी पद रज 'नाभौ पावै ।।४।।

पद ५

नमो नमो श्रीजनक लली जू ।
जनमत भई विदेह नृपति गृह कीरति त्रिभुवन उमगि चलीजू
मिथिला आलबाल निमिकुल की सुकृती वेली सुफल फलीजू
बीनत मुनि माली ब्रह्मादिक बाल चरित मृदु कुसुम कलीजू
षटदल गुण सम्पति परिपूरण चितवत अनुपम रूप झलीजू
कृपा विवस सौरभ प्रेमा भर सेवत अलि बड़भाग भलीजू

'सूर किशोर' निगम जल सींचत मायिक गुण एको न रलीजू
अवलम्बन रघुवीर कलपतरु भई भू पर उपमा अतुली जू ।।

पद ६

श्रीमिथिलापुर बजत बधाई ।
चौदहू भुवन न सुनी कबहूँ अस, जस उत्साह सजाई ।।१।।
माधव मास पुनीत परमप्रिय तिथि नौमी सरसाई ।
अग जग हरष बरष सुर कुसुमन, नभ दुन्दुभी बजाई ।।२।।
रानी सुनैना मन प्रसन्न युत गान करत हरसाई ।
मध्य दिवस प्रगटत भई सियजू, अद्भुत रीति जगाई ।।३।।
दिव्य सिंहासन मणिमय झालरि नाना रतन लगाई ।
षोडस सखी सौज मंगल सजि नाम सखी समुदाई ।।४।।
श्री प्रसाद श्रीचन्द्रकलाजू विमला विमल बनाई ।
मदनकला श्रीविश्वमोहिनी, श्रीउर्मिला भलाई ।।५।।
चम्पकमाला रूपलताजू चारुशिला रुचि राई ।
हेमा छेमा वरासुरोहा, पद्मसुगन्धा माई ।।६।।
श्रीलक्ष्मणा सु सुभगा नवेली, चारु लोचना माई ।
चहुँदिशि सखी लिये वनमाला, स्वामिनि सेवा लाई ।।७।।
चारु चंद्रिका जटित मनोहर, नख सिख सुन्दर ताई ।
शेष शारदा मौन गहीं जब, को जो शोभा गाई ।।८।।
जनकराज श्रीरानि सुनैना, यह छबि देखि लजाई ।
मन की जाननिहारि सु सीता, बाल रूप दरसाई ।।९।।

कौतुक देखि विधाता शंकर, देवराज समुदाई।
नाचत गावत जय जय स्वामिनि, 'जानकीवर'जय पाई ॥१०

पद ७

आजु रंगीली बजत बधाई।
रंग महल की पवरि बजाई, रंग भरी सहनाई ॥
रंग की मूरति कुँवरि प्रगट भई, रंग सों मिथिला छाई।
'कृपानिवास' रंगीली सखियाँ रंग, भरि मंगल गाई ॥

पद ८

आजु जनक नृप राज सदन में बाजत रंग बधाई।
प्रगट भई शुभ रूप शीलनिधि श्रीसीता सुखदाई ॥
सुनि पुर नारि सिंगार नवल तन घर घर ते उठि धाई।
किंकिनि नूपुर शब्द मनोहर पुर वीथिन छवि छाई ॥
हाथन कचन थार विराजत मंगल साज सजाई।
गावति गीत पुनीत सबै मिलि निज मन्दिर सों आई ॥
निरखि वदन छवि सदन कुँवरि को पुनि पुनि लेत बलाई।
वारत भूषन करत आरती हरष न हृदय समाई ॥
रानी जू वर वसन सुवासिनी विविध भाँति पहिराई।
चिर जीवहु यह सुता सुलक्षणि देत असीस सुहाई ॥
सतानन्द आनन्द उमगि मन संग विप्र समुदाई।
करत वेद विधि सामगान धुनि श्रवण सुखद मन भाई ॥
मागध सूत भाट वन्दीजन विरदावली सुनाई।
देत दान नृप धेनु वसन मणि कंचन झरी लगाई ॥

ध्वज पताक कनक कलश पुर शोभा बरनि न जाई ।
बजत निशान भूमि नभ सुर मिलि कुसुमावलि वरषाई ।।
सुफल मनोरथ भये सबनि के मोद अधिक अधिकाई ।
हिये हुलास 'दासनारायण' भक्ति निछावरि पाइ ।।५२।।

पद ६

आजु सखी एक बात नगर में अबहिं सुनी मन भाई री ।
प्रगट भई सर्वेश्वरि सीता जनक नृपति घर आई री ।।
गृह गृह द्वार नौबतैं बाजैं मोतियन चौक पुराई री ।
नगर गली बाजार जहाँ तहँ गावत गीत सोहाई री ।।
कदलि खम्भ अरु ध्वजा पताका विविध वितान तनाई री
कंचन कलश बनी दीपावलि पुरी रुचिर छवि छाई री ।।
हरदी दही परस्पर छिरकत माखन मुख लपटाई री ।
नाचत सब नर नारि परस्पर देह दशा विसराई री ।।
उड़त गुलाल अबीर अरगजा अवनी कीच मचाई री ।
केशरि घोरि कुमकुमा छिरकत कनक कलश धरवाई री ।।
कनक रतन गज बाजि जहाँ तहँ रंग रंग वसन बनाई री
देत दान महराज जनक नृप याचक जनहिं बुलाई री ।।
चेरि भई सब अष्टसिद्धि श्री नवनिधि रही लजाई री ।
अचरज कहा जगत की जीवनि प्रगटी सिय सुखदाई री ।।
उमगे फिरत सकल पुरवासी सिय स्वामिनि सी पाई री ।
सुख विलसो श्रीजनकनन्दिनी 'वालअली' वलिजाई री ।।
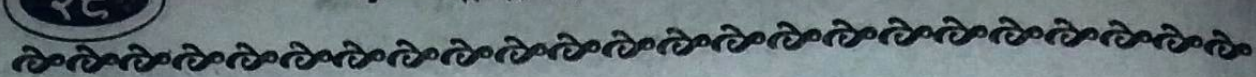
पद १०

माधव मुकता शुभ दिन नौमी जनम लियो है जनकलली ।
जनकराय के द्वारे गावैं नारि सबै आनन्द रली ।।१।।
माघव मास शुक्ल पक्ष नौमी योग नक्षत्र शुभ वार ।
भूतल ते मानो भानु उदय भयो जगमग ज्योति अपार ।।२।।
दिव्य सिंहासन रूप अनूपम धरे सकल शृंगार ।
चामर छत्र ब्यजन पर भूषन सखी करत विधि चार ।।३।।
धूप दीप नैवेद्य निराजन पूजि नृपति करवाई ।
वानी विमल प्रशंसति पुलकित पुनि पुनि लेत बलाई ।।४।।
जब भयो कन्या कुवँरि सोम रति मानुष तन अनुभाई ।
भयो सकल जग जानि मुदित मन बोधत मुनिवर राई ।।५।।
मुनी देखि चरननि के चिह्ननि कहत निगम अवतारी ।
अष्टसिद्धि नवनिधि चारि पदारथ जनकराय के द्वारी ।।६।।
घुरै निशान नगर नभ जै धुनि हरषै वरषै फूल ।
वेद बिप्र गुरु सुनि सुनि सुकृत विधि भै सब अनुकूल ।।७।।
करै कुतुहल मंगल गावैं वृद्ध युवा नर नारी ।
तोरन कलश वितान पताका मोतियन वन्दन वारी ।।८।।
मिल ब्रह्मऋषि राजसभा सुर सादर शेष महेश ।
बुझि गई ताप सकल जीवन के सुफल भयो सब देश ।।९।।
पुर परिजनगन याचक जन जे भइ नृप मन्दिर भीर ।
चन्दन चारु अरगजा छिरकैं वरषैं कुमकुम नीर ।।१०।।

गुनि गन्धर्व अपसरा नाचत करैं नटी नट गान।
उघटैं गति नव भेद सप्त स्वर रागिनि ताल बँधान ।।११।।
धेनु रतन मनि वसन बाजि गज कहैं नृपति देउ देहु ।
दान मान सनमान सबै मानो बरषन लागे मेहु ।।१२।।
बड़ी भई सुख सम्पति नृप के सुखी भयो संसार ।
भुवन चतुर्दश के दुख दारिद गये एक ही वार ।।१३।।
तिरहुत देश जनकपुर शुभ गृह आदि शक्ति अवतार ।
'सूरकिशोर' करन जग मंगल हरन सकल भव भार ।।१४।।

पद ११

सुनैना माई धनि धनि तेरे सुनैन ।।
जाको भेद वेद नहिं पावत सोइ सिय प्रगठी ऐन ।
रती रती भरि लक्ष्मी लव भरि यहि समता कोइ हैन ।।
रूप राशि तोरी प्रिया लाड़िलि, गुननिधि वरनि सकैन ।
'युगलविहारिणि' हिय उमगत लखि विहँसनि छवि सुनि वैन

पद १२

सुनैना माई धनि धनि तेरी बेटी ।
जाको अंत अनंत न पावत सो तव गोद में लेटी ।
जेहि दिशि दृग किंचित अवलोकत तेहि के सब दुख मेटी ।।
यहि पद सद रति अति मुददाई सब सुख सुकृत समेटी ।
श्रीगुरु कृपा "सुयुगलविहारिनि" पाय प्रियापिय भेंटी ।।

पद १३

बरस गाँठ सियजू की आई सदन सुनयना बजत बधाई ।

मृगनयनी कलकोकिल वयनी हिलिमिलि गावत हिय उमगाई।।
माधव मास नौमि मंगलप्रद मोद विनोद मघा झरि लाई ।
'युगलविहारिनि' प्रिय तमाल लसि प्रेमलता अभिमत फल पाई

पद १४

जय जय जय श्रीस्वामिनि सीता ।
बरष गाँठ जादिन सिय आयो, भायो सब जग भयो अभीता ।
जहँ तहँ लोक अशोक विलोकत,कोउ न रह्यो सुख आनन्द रीता
श्रीमिथिलेश सुनैना रानी, आपु, बजावत गावत गीता ।।
ज्ञानी ध्यानी अभिमानी सब, कहत अवस ह्वै रघुवर सीता ।
'जानकिवर' की प्राणपियारी, जपत रहत नित सीता सीता ।।

सोहर–पद १५

जनक सुता भई आज काज बिसरावहि हो ।
ललना, सजि नव सप्त सिंगार नृपति घर जावहिं हो ।।१।।
भरि भरि मंगल थार समाज बनावहिं हो ।
ललना झुन्ड झुन्ड मिलि चलत महाछवि छावहिं हो ।।२।।
श्रीजनक भवन में जाय चोप उपजावहि हो ।
ललना नाचहिं राचहिं रंग बाजने बजावहिं हो ।।३।।
धनि राजा धनि रानीजू गोद खिलावहिं हो ।
ललना, धनि हम सब पुर नारि जो सोहिलो गावहिं हो ।।४
यों कहि बृन्द बनाय रावले आवहिं हो ।
ललना, निरखि लली करि आरति अति हुलसावहिं ।।५।।
यह समाज सूख देखि देव ललचावहिं हो ।

ललना, ब्योम विमान बनाइ सुमन झरि लावहिं हो ॥६॥
जो यह मंगल गावहिं गाय सुनावहिं हो।
ललना, 'सुधामुखी' सिय चरन भक्ति वर पावहिं हो ॥७॥

पद १६

हलवा जोतै ते राजा जनकन एहो राजा जनकन हो।
ललना, अनुपम कन्या पाये सु मोद बढ़ायेल हो ॥१॥
मास बैसाख शुक्ल पक्ष नौमी, शुक्लपक्ष नौमी न हो।
ललना, सीता नाम धराये मुनिन गुन गायेल हो ॥२॥
तोरन केतु पताक, सु ऐहो पताकन हो।
ललना, वन्दनवार बँधाय सु नगर सुहायेल हो ॥३॥
वेद पुरान प्रशंसत जाहि प्रशंसत हो।
सुनैनाजू गोद खेलायेल हिय हुलसायेल हो ॥४॥
'रामशरण' मिथिलेश द्वार पर, मिथिलेश द्वार पर हो।
ललन, चहुँदिशि मंगलचार सु सोहर गायेल हो ॥५॥

पद १७

अवधपुर मंगल धुनि सरसानी।
नवल वधू की बरसगाँठ लखि, फुली दशरथ रानी ॥
नगर नगारे नौबत बाजे, नाचहिं नवला गावत वानी।
'कृपानिवासअली' छबि निरखत, वारि सु पीवत पानी ॥

रेखता पद १८

लखो री आज निमिराजैं, खुशी के सज रहे साजैं।
महल में वेद धुनि भारी, करें हैं विप्रवर झारी ॥

मगन मन सब ह्वो याचक गन, मिलेहैं मणि जटित भूषन।
सुआसिनि गान हैं करती, मुदित मन साथियाँ धरती ।।
सुमन बहु रंग की माला, बरषती हैं अमर वाला।
गगन में दुन्दुभी बाजी, हुये नर नारि सब राजी ।।
सुगन्धित जल छिड़कते हैं, चटकते हैं मटकते हैं।
समय है खूब सुखदाई, सुनैना ने सुता जाई ।।
स्वभाविक ही सुहावन हैं, करोड़ो रति लजावन हैं।
'युगल' वर की कृपा पाऊँ, सदा इनका सुयश गाऊँ ।।

पद १६

सुहाई आज की रजनी, विलोको नैन भर सजनी।
सखी सब रंग राती हैं, सुहावन गीत गाती हैं।
विविध भूषण वसन धारे, किये नव सप्त श्रृंगारे।
सुनैना के भवन सोहैं, रमा गौरादि मन मोहैं।
लली विधु मुख निरखती हैं,पुलकि तन-हिय हुलसती हैं।
लता सी हेम की डोलैं, मधुर मृदु पिक वचन बोलैं।

पद २०

सुनैना रानी बजत बधाई तेरे द्वार री।
प्रगटो सुता सुलक्षनि सुन्दरि, मिथिला अवध सिंगार री ।।
रघुकुल तिलक द्वार तेरे अइहैं, भूपति मुनिन समाज री।
'अग्रअली' की स्वामिनि प्रगटी, रसिकन हिय अनुराग री ।।

पद २१

सुनैना रानी अपनी लली को दुलरावें।

मुख चूमै अरु कण्ठ लगावै, मन में मोद न मावैं ।।
शिव ब्रह्मा जाको पार न पावै, निगम नेति कहि गावैं ।
'हरि सहचरी' बड़भागिनि रानी, अपनी गोद खिलावैं ।।

पद २२

बाजे बाजे बधाई आजु जनकपुर रंग भरी ।
रानी सुनैना बेटी जाई, आजु सुदिन शुभ योग घरी ।।
भये मुदित सुर साधु भूमि द्विज, असुरन के सिर गाज परी ।
गोरे अंग रूप गुण राशी, दामिनि की दुति दूर करी ।।
घर घर गान करत पुर बनिता, मंगल घट प्रति द्वार धरी ।
रुचिर विमान पुंग कदली तरु, रोपे सुमंगल द्रव्य भरी ।।
सजि-सजि यान विवुध नभ छाये, बरषत कुसुम लगाइ झरी ।
'रसिकअली' गावत सुरगायक, नाचत कोटिन इन्द्रपरी ।।

पद २३

तेरी लली चिरजीवो री माई ।
सकल लोक पद सेवति याके, सीता नाम सुहाई ।
जग विजयी गुणशील मनोहर, नेह भरचो रसदाई ।
'रसिकअली' बर मिलिहैं याको, कोटि अनंग लजाई ।।

पद २४

चिरजीवो हमारी दुलारी सिया ।
जाके हित मिथिलेश सुनैना, अमित जनम बहु तप सु किया ।
गनपति गौर महेश कृपा से, पूरी भई अभिलाष हिया ।
अब नित नव आनन्द सरसैहैं, सुख पैहैं मिथिला की तिया ।

नर नारी मनमाने मनोरथ, पाय न फूलैं समैहै हिया।
'मधुपअली' सिय के ब्याहन को, जब ऐहैं अवधेश पिया॥

पद २५

हमारी लाड़िली गुसइयाँ कुशल राखैं।
जाकी कृपा कोर नित-नूतन हम आनन्द सुधा चाखैं।
देवी देव पूजो सब मिलिके जामें नहिं कोउ मन माख॥
बर अनुकूल देव जगदीश्वर पूजें हिया की अभिलाषैं।
'मधुपअली' युग युग जिवो स्वामिनि श्रीसियजू की जैजै भाखैं।

पद २६

युग युग जीयै तेरी बेटी, सुनैना रानी।
छबि सुषमा लावण्य एकरस, सुख श्रृंगार समेटी।
मूरति मधुर श्याम घनमोहन, भुजन सों भरि भरि भेंटी।
'मधुरी' नित नव अचल सुहागिन, प्रीतम प्रीति लपेटी॥

झूलना पद २७

शीरध्वज कुशध्वज बैठे महाराज अजी वाह वाह।
देव सभा राज सभा लीन्हें, सब साज अजी वाह वाह॥
बड़े बड़े भूप आये बैठे सब ठट्ठ अजी वाह वाह।
वेद पढ़ैं चौवे अरु ओझा मिलि भट्ट अजी वाह वाह॥
ढाढी अरु भाँड़ आज नाचत हैं नट्ट अजी वाह वाह।
देखि दुनी रीझि गये दान दिये खट्ट अजी वाह वाह॥
कड़े दिये मोती दुशालन के पट्ट अजी वाह वाह।
हित 'जैराम' मगन भये कहे सियाराम रट्ट अजी वाह वाह॥
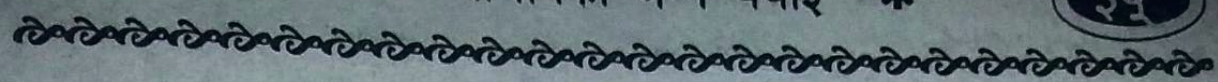
पद २८

सुनैना रानी गोद खेलावैं प्यारी जानकी ।
मुख चूमति अरु वदन विलोकति, पय प्यावत दे मान की ।
प्राणप्रिया होइहैं सबही की, पटरानी कुल भानु की ।
'हरिसहचरि' की प्राण जीवन धन, मूरति मोद निधान की ।।

पद २९

सखी री श्री महलन के बीच बरसि रहि-प्रेम घटा घनघोर ।
हिलिमिलि हरषि हरषि हिय हेली, नाचै नई नई नाच नवेली
चारिहुँ ओर चली दृग खंजन दै अंजन की कोर ।।
रानिन मोतियन चौक पुराये, पूजन कलश सखिन धरवाये ।
मंगल गावहिं सुरन मनावहिं, गहि अंचल की छोर ।।
सुरगन बैठि विमान पधारे, बरसत सुमन बजाय नगारे ।
सिया जन्म उत्सव को आली भई त्रिभुवन में शोर ।।
धन मिथिला के नर अरु नारी, महल टहल के जे अधिकारी ।
जोर जोर दृग जोर विहारी, ललि चरणन की ओर ।।

पद ३०

डगर डगर ब्रिच मिथिला नगरिया बधैया बाजै ।
राजा जी के शोभे मुकुट पिताम्बर,
सुनैना रानी के लाल पियरी चुनरिया ।
राजा जी लुटावे अनधन सोनमा सुनैना रानी,
नग जड़ित जेवरिया, सुनैना रानी ।।
'भगवत रसिक' मगन होइ गावे,
नचन लागे सब लोग लुगैया ।।

पद ३१

प्रगटी लली मिथिलापति घर रे,
मोद भयो सुख भयो त्रिभुवन में।
बजत बधाई गुनिजन गावत,
नचत मुदित मन नारी औ नर रे॥
पुर कुल वधू थार लै निकसत,
विकसित मुख दुति दामिनि तन रे।
'दम्पतिअली' सुमन सुर बरसत,
हरषत मुनिजन बिधि हरिहर रे॥

पद ३२

जुग जुग जीवैं तेरी बेटी, सुनैना रानी।
बड़भागिनि तेरे घर प्रगटी, सकल गुनन की खानी॥१॥
अचल सोहाग भाग यश भाजन, भाविक जन जिय जानी।
जेहि सेवत तजि लोक लाज गृह, करम वचन मन बानी॥२
श्रीमिथिलापुर नारि निहोरत, वचन सुधा रस सानी।
'ज्ञानाअलि' सिय जन्म सोहिलो, त्रिभुवन को सुखदानी॥३

पद ३३

आज आनन्द मची मिथिला में, प्रगटो मिथिलेश किशोरी।
तीहुँलोक सुनि मगन भये सब, आनन्द सागर उमगि चली री
गगन देव दुंदुभी बजावहिं, सब मिलि मंगल गान करो री
मंगल थार सजो सब आली राज महल को वेगि चलो री।

देखत सुन्दर रूप लली की,

तन मन धन को वारि दियो री।

चिरजीवो 'सियाअली' की स्वामिनि,

मम उर महल आय बसो री ॥

पद ३४

आलि चलो जहाँ बाजे बधाई ॥

भई शोर चहुँ दिशि बाजत कि देखो बाजत शहनाई।

घर घर की सब युवतिन मिलि-मिलि मंगल थार सजाई

हुलसि चली सब राज भवन में आनन्द मंगल गाई।

निरखि लली छवि डारी निछावरि पुन पुनि लेत बलाई।

'सियाअली' निज भाग्य बखानहिं नैनन को फल पाई ॥

पद ३५

बाजी बाजी आनन्द बधावरी।

सुनि बधावन मिथिलापुर वासिन प्रेम मगन उठी धावरी ॥

कोई सखी नाचति कोई बजावति कोई मिलि मंगल गावरी।

करति कुतूहल भूपति आँगन मिलि मिलि के सब नागरी ॥

कहति सबै सुनो अम्ब सुनैना देहुँ ललि निछावरी।

'सियाअलि' कछु दूजो न लईहौं ललि चरण अनुराग री ॥

पद ३६

रावल रंग बधाई बाजइ छै।

मंगलमणि महरानि सुनैना सुन्दरि कन्या जाई छै ॥

सखियन हिय सरसई छै मंगल गावत आई छै।
'सियाअली' शोभा त्रिभुवन की जनक नगर पर छाई छै।।

सोहर पद ३७

आज श्रीमिथिला नगरिया में नौवति बाजत री ।।
रामा घर घर आनन्द बधइया परम सुख छाजत री ।।
श्री महाराज जनकजी के भाग्य उदित भई री।
रामा त्रिभुवन की सुख सीमा सियाजू प्रगट भई री ।।
शिव ब्रह्मादिक तरसत जाके चरन रज की।
रामा धनिधनि मिथिला नगरिया सुभाग्य नारी नर की
निरखत भरि भरि नैन ललीजू की प्रभा शोभा वर गी।
रामा सरसत सुख हिय बिच चरण चित लागरी ।।
'सियाअली' कर जोरि निछावरि मांगति मोद भरी।
रामा हिया बिच राखो ललीजू के छवि मोहि भावत री।

पद ३८

मिथिला नगरिया सोहावनि सुख सरसावनि है।
रामा जहँ प्रगटि सुखअयना सिया जू मनभावनि री।।
रामा घर घर प्रति आनन्द बधइया बाजत री।
रामा नभ से हरषित देव सुमन बरसावत री ।।
राया श्रीमिथिलेश मगन होय निछावरि बाँटत री।
रामा वेगि चलो तहँ सजनि सु मंगल गावत री ।।
रामा धनि धनि रानी सुनैना गोद सिया शोभित री।

रामा उमा रमा ब्रह्माणि चरण रज वन्दित री ।।
रामा आज बधाई लली ज़ू की अम्ब मोहि दीजै री ।
रामा नित सिया जू को निहारि 'सियाअली' जीवै री ।

पद ३९

आज सखी धन्य भाग्य हमारी ।।
ये प्राणनहु के प्राणिनि सिय जू प्रगट भई सुकुमारी ।
जो भरि नैना सुनयना को भई अब देखन वारी ।।
निछाबर लईहौं अम्ब से पद सेवन अधिकारी ।
'सियाअली' निस दिन संग रहिहौं चरण सरोज निहारी

पद ४०

आलि चलो जहाँ बाजि बधाई ।
भई शोर चहुँ दिशि बाजन की देखो बाजत शहनाई ।
घर घर की सब युवतिन मिलि मिलि मंगल थार सजाई।।
हुलसि चली सब राज भवन में आनन्द मंगल गाई ।।
निरखि लली छवि करहि निछावरि पुनि-२ लेत बलाई।
'सियाअली' नित भाग्य बखानहिं नैनन को फल पाई।।

पद ४१

मिथिलापुर नौबत बाजि रही ।
जहँ तहँ वारवधु मिलि नाचहिं युवतिन मंगल गाय रही ।।
हर्षि देव सुमन बहु बर्षहि चहुँ दिशि आनन्द छाय रही ।
धन्य धन्य हो रानी सुनैना धन्य मिथिलेश गृहसुख छाय रही

त्रिभुवन विदित प्रभाव ईश्वरी सो तुम्हरे घर आय रही।
सियाअली' हिय आस वेलि यह आज हरित हो फुलाय रही

पद ४२

आज बजत राजमहल सहनाई सखि उर आनन्द छाई ।।
प्रगट भई श्री जनक किशोरी आज महानिधि सब पाई।
श्री मिथिलेश भवन यहि सुख भये सर्वस देत लुटाई ।।
चलि लीजै लोचन फल प्यारी त्रिभुवन की छवि छाई।
'सियाअली' प्राणन की प्यारी लेऊ निज हिया से लगाई।।

पद ४३

प्यारी बाजी वधाई मिथिलापुर सुखदाई।
प्रगट भई श्री राजदुलारी चहुँ दिशि आनन्द छाई।
मिलि चलिये री राजमहल को मंगल साज सजाई ।।
अम्ब सुनैना सुखअयना को देहु हमें दिखलाई।
'सियाअली' यह स्वामिनि मेरी हो करिहौं सेवकाई ।।

पद ४४

मिथिलापुर आनन्द रूपमई।
आनन्द के अवन प्राण के सर्वस, आजु सियाजू जन्म लई।।
आनन्द की धुनि बाजि बधाई, सोहिलो गान आनन्दमई।
श्री मिथिलेश छके आनन्द में, सर्वस आज लुटाय दई ।।
दरसत आनन्द रूप लली की, जय-जय चहुँदिशि छाय गई।
'सियाअली' आनन्द छन ही छन उर बीच बाढ़त नित्य नई

पद ४५

आज दीजै निछावरी महरानीजू मेरी ।।
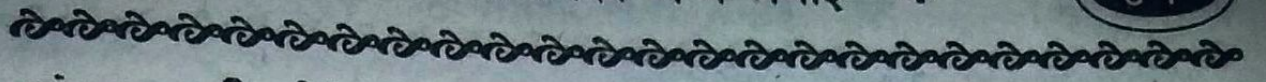
मंगल भई तोहे अम्ब सुनैना प्रगटी राजकिशोरी ।
अखिलेश्वरी तब घर आई पायहु सुख बहुतेरी ।।
चिरजीवैं यह राजदुलारी मोहि बनाइये चेरी ।
'सियाअली' प्यारी पद पंकज देहु प्रेम रसो री ।।

पद ४६

चिरजीवैं सुनैना तेरो लली ।।
याको देखि हृदय शीतल भयो आनन्द सागर उमड़ि चली ।
धन्य-धन्य हो अम्ब सुनैना आज महानिधि तोहि मिली ।।
सदा आनन्द रहै प्यारीजू सुषमानिधि सुख देय भली ।
'सियाअली' पाई निज स्वामिनि बहुत दिनन पै भाग्य फली

पद ४७

जनकपुर प्रगटी सिय सुखदानी ।
माधव शुक्ल सरस तिथि ग्रह दिन,
जोग लगन शुभ थानी ।
श्रुति कीरति मांडवी उरमिला,
अलिगन संग रस सानी ।।
नभ अरु नगर निशान गान धुनि,
छबि नहि जाति बखानी ।
बरसत मेघ सुमन तरु अमृत,
'प्रेम सुमोद' समानी ।।

पद ४८

बरस गांठि जा दिन सियकेरी, पिय सब सखिन बोलाई ।

कहे आजु प्यारी जन्मोत्सव, मंगल सजहु बनाई ।।
सुनि पिय बचन तुरत सब आली, हरषि चली सचुपाई ।
बंदनवार कलस धुज चँदन, मोतिन चौक पुराई ।।
जहँ तहँ सुमन बिछाय गलिन सब, अतर गुलाब सिचाई ।
साजि साथियाँ मंगल गावति नौबत धुनि सरसाई ।।
नाचत नागरि मोद भरी सब, नूपुर की धुनि छाई ।
महल महल प्रति बजत बधाई, सोभा बरनि न जाई ।
सारी पीत रँगाय सुप्रीतम, भूषन सकल मँगाई ।।
सब सखियन कहँ दीन्ह निछावरि, जो जिनके मनभाई ।
पहिरि पहिरि सब तुरित सहेली, गावति विसद बधाई ।।
निजकर पिय रचि सियहिं सिंगारी,आरति कीन्ह सुहाई ।
'प्रेमलता' पिय तन मन वारी, संपति सकल लुटाई ।।

पद ४६

सखि रानी सुनैना कुंवरि पाई ।
प्रगटी आजु यज्ञशाला में, भूपति कंठ लगाई ।
रूप राशि सब अंग छबीलो कहत सखी लखि आई ।।
चलोरी चलि सब राजभवन में हिलिमिलि यूथ बनाई।
लोचन सफल करें चलि आली, बहुविधि गाल बजाई ।।
आवत जानि नगर नव नागरि, मातु उठि हरषाई ।
पाटंबर के दीन्हि बिछावन, आदर करि बैठाई ।।
रूप अनूप देखि सब कामिनि, देह दशा बिसराई ।
प्रेम विवश लखि रानि सुनैना, चूनर चारु ओढ़ाई ।।

यह उत्साह सुन्यो ढाढ़नियाँ निमिवंशिन की आई।
साज बाज सम्हारि मुदित मन गावन लगी बधाई ॥
ढाढ़िनि कुँवरि मँगाय लाय उर, बहुविधि लाड़ लड़ाई।
ठगि सी रही निरखि गति भूली लखि सिय रूप निकाई।
परम प्रमोद भरी महतारी, भूषन बसन मगाई।
'प्रेमलता' ढाढ़िनि परितोषी, भली भाँति पहिराई ॥

पद ५०

नृप द्वारे बधइया बाजे अली।
परमानन्द मगन नर नारी कहत प्रगट भइ आजु लली।
धन्य भाग भइ रानि सुनयना कीरति भुवन लही अचली ॥
पुन्य पयोधि सखी मिथिलापति तैसी सुमेधा पुन्य थली।
हम सब धन्य धन्य मिथिलापुर सबकी सुकृति सुवेलि फली।
घर घर मंगलमोद बधाई गावति नारि सुरंग रली।
जय जयकार करत नभ सुर मुनि बरसत सुमन सुकंज कली।
मोद प्रमोद भरी सब नाचहिं नगर नारि जहँ तहँ नवली।
'प्रेमलता' धन धान्य लुटायो भूसन बगरे गली गली ॥

पद ५१

आवो आवो बधैया गावो री।
यह उत्साह दिवस कब पइबो धनि धनि भाग मनावो री।
तोरन वंदनवार बँधावो ध्वज पताक पुर छावो री ॥
विरचि सुभवन सकल मंगलमय चौके चारू पुरावो री।
धन्य सुमाधव मास पाख सित नोमी तिथि कब पावो री॥

सीता जनम आज मिथिलापुर मंगल मोद बढ़ावो री।
अतर गुलाब सुगंध सिचावों चित्र विचित्र रचावो री।।
राज भवन तें चारू चौगुनों पुर में रचो बधावौं री।
मोजन विविध सुदानमान युत देहु द्विजन मन भावो री।
हरिजन अतिथि खवाइ भलीविधि सियहिं अशीष दिवावो री
वारमुखी बहु गुनी बजनियाँ ढाढ़िनि भोर बुलावो री।
विधि भाँति सनमानि मुदित मन घर घर आजु नचावो री।
चारि वग्न की न्योति सुवासिनि चूनरि चीर ओढ़ाओ री।
'प्रेमलता' सिय जनकलली हित भूषन वसन लुटावो री।।

पद ५२

मिथिला में बधैया बाजे री।
जन्म महोत्सव जनकलली को घर घर प्रति पुर साजै री।।
बजत निशान शंख शहनाई विधि मनहुँ घन गाजै री।
परमानंद मगन नर नारी भूलै निज निज काजै री।।
राज भवन की शोभा जैसी कहत शारदा लाजै री।
जहां अखिल लोकनि की स्वामिनि सियजू आइ विराजै री।
परम महोत्सव रचेउ नगर नभ ध्वज पताक बहु भ्राजै री।
'प्रेमलता' नृप कोष लुटायो याचकता दुख भाजै री।।

पद ५३

नृपरानी परम धन पायो री।
अजा अनादि अनूप नाम बहु वेद संत गुन गायो री।
सगुन ब्रह्म जगदम्ब सिया सोई लीला तन प्रगटायो री!
बिनु सेवा जो द्रवति दीन पर दीवो सदा सुहायो री।

सोइ गुनखानि सिया सुरस्वामिनि बालचरित मनभायोरी
परमानंद नगर नृपरानी, मंगल साज सजायो री ।
सिय स्वामिनि को जन्ममहोत्सव भांति अनेक बनायो री।
भवन बाजार गली चहुँदिसिपुर सींचि सुगंध लिपायो री ।
मनिगन चौक पुराय विबिध घट चित्रित चारू थपायो री।
भवन भवन चित्राम काम जनु निजकर रूचिर बनायो री।
तोरन वंदनबार द्वार प्रति कदली कलश सुहायो री ।
मनि मुक्तनि के लाल झरोखनि ध्वज पताक पुर छायो री।
भेरि निशान शंख शहनाई घर घर बजत बधयो री ।
गावहिं मंगल विबुध वधू नभ सुरन सुमन झरि लायो री।
मागध सूत वंदि गुन गावत जय जयकार सुनायो री ।
देश देश के मुनिजन आवे निज-निज गुन दरसायो री ।
भूषन वसन विपुल अनमोले पाय चले मन भायो री ।
बढ़ही आदि बजनियां मंगल पुनि पुनि बोलि पठायो री ।
दियो दान अनचह्यो विविध नृप ते सब डगरि लुटायो री।
सिव विरंचि सुर सिद्ध नाग मुनि मंगल रूप बनायो री ।
घर घर लेत निछावर डोलहिं ब्रह्मानंद भुलायो री ।।
रचना देखि विचित्र अनूपम सकल सुरन सुख पायो री।
वीथिन्ह फिरहिं मगन मन फूले धन्य स्वभाग मनायो री।
दंपति न्योति जेमावहि घर घर देइ दान मन चायो री ।
'प्रेमलता' मंगल त्रिभुवन को मिथिलापुर चलि आयो री।

गजल पद ५४

लोनी लली मिथिलेश की सिय स्वामिनी मेरी ।
प्रगटी कृपा की खानि सदगुन रूप की ढेरी ।।
झरने लगीं नव नौबतें नभ नगर जहँ तहाँ ।
बाजें नफीरी रँग भरी वर बाँसुरी भेरी ।।
घर घर निछावर दे रहे नर नारि मुद भरे ।
वरषैं सुमन सुर व्योम ते जय जय कहैं टेरी ।।
नाचें गुनी नृपद्वार विपुल भाँड़ अपसरा ।
वंदी बदैं वंशावली निमिवंश घनेरी ।।
भाषैं सुविप्र वेद सुयश सूत बखानैं ।
गावें सुनवल नागरी मंगल समय हेरी ।।
पावें सुदान मान सकल मन के भावते ।
बहुरें अशीष देत कुँवरि चिरजिवो तेरी ।।
मिथिला सुधन्य धन्य राय रानि सुनैना ।
अखि 'प्रेमलता' धन्य भई चरन की चेरी ।।

* श्रीचन्द्रकला जन्म बधाई *

जै जै श्रीचन्द्रकला सिय प्यारी ।
माधव मास शुक्ल शम्भू तिथि मध्य दिवस प्रगटी मनहारी।
जस अनन्द सिय जनम जनकगृह तैसहि चन्द्रभानु घर भारी
नाम करन गौतम विचारि धरे, चन्द्रकला जगमग उजियारी

इनके गान तान सुनि प्रीतम प्रिया, होंत नितही बलिहारी।
इनकी आस करत जे भाविक, ते सियराम महल अधिकारी।
'जानकिवर' तेहि मिलहिं निरन्तर, कृपा करहिं रघुवर सुखकारी

पद २

श्री मिमिलापुर बजत बधाई।
चन्द्रभानु घर वर नौबत झर, रंग भरी सहनाई।
चन्द्रप्रभाजू की कुवँरि प्रगट भई, चन्द्रकला छवि छाई ।।
सुख समाज निमिराज प्रशंसत, निमि वंशी समुदाई।
बैठे आइ सभा छबि निरखत, इन्द्र सभा ललचाई ।।
दान मान पूरन गुनि जन भय, निरखि रूप सुखदाई।
'युगलप्रिया' पालनो रतनमय, मातु मुदित पौढ़ाई ।।

रेखता–पद ३

सहेली सीय की प्यारी, प्रगट भई आज सुखकारी।१
छठी उत्साह सिय केरी, जनम भो ताहि मधि मेरी।२
चलो सखी राज के रावल, सजैं सुख साज मन भावल।३
सोहिलो गाय छवि निरखैं, बलइया लेहिं हिय हरखैं।४
लुटावैं वसु जो संचन की, पुरावैं आस मंगन की।५
कला जेहि चन्द्र शुभ नामा, अलिनि में अग्र रस धामा।६
रसिक रसराज आचारज, गोप रस केलि में आरज।७
नवल कलवौन नारद को, सिखाई जितेउ तुम्वरू को।८
युगल सुख साजि फुलवारी, मिलावत पीय अरू प्यारी।९
'प्रेमरसमोद' सुख दानी, सु उत्सव जनम को ठानी।१०

पद ४

बधाई मिथिलापुर बाजै, भई सर्वेश्वरी आजै ।१
सखी सब हर्ष में गाजै, सजै सुख चैन के साजै ।२
भानु श्रीचन्द्र घर आई, बधाई देन सुखदाई ।३
चन्द्रप्रभा मग्न हैं भारी, सुता मुख देखि सुखकारी ।४
लुटाती हैं विविध भूषन, भये खुशहाल जाचक जन ।५
प्रभा यह श्याम की आई, किशोरीजी के मन भाई ।६

पद ५

चन्द्रकलाजू के नवल कुञ्ज में बाजत आज बधाई ।
माधव मास शुक्ल तिथि शम्भू सकल सखी तहँ आई ।।१
सर्वेश्वरी महान सखिन में ताते मुद अधिकाई ।
बन्दन वार पताका केतू कलश वितान तनाई ।।२
सजत साथियाँ मंगल गावति मोतियन चौक पुराई ।
कौतुक करि नाचति नव नागरि नूपुर धुनि सरसाई ।।३
अमित अलिन युत दम्पति आये, स्वागत करि बैठाई ।
अति आनन्द भयो तेहि अवसर, सो सुख बरनि न जाई ।।४
प्यारी की प्रिय मुख्य सहेली, सब कहँ नेवति बुलाई ।
भई भीर आँगन घर बाहर, अति उत्साह सुहाई ।।५
सिय पिय मध्य सिंहासन राजैं, चहुँदिशि सखि समुदाई ।
भोजन विविध भाँति के नाना, सादर सबहिं पवाई ।।६
अचवन करि बैठे अलियन सह, अतर पान अर्पाई ।
माल वसन भूषन दै सबहीं, आरति करि सिरनाई ।।७

होन लग्यो रस गान नृत्य नव, निरखत सब मन भाई ।
'प्रेममोद' आचार्य कुञ्ज रहि, करि उत्साह बिताई ।।८

पद ६

जा दिन चन्द्रकला अलि जनमी, सो दिन आजु सुहाई ।
सर्वेश्वरि सरदारि सखिन में, रसिकन को रस दाई ।।
सकल सखी मिलि मंगल गावति, नौबत बजत सुहाई ।
मंगल कलश चौक मोतियन की, रचना सकल बनाई ।।
अति उत्साह भरी नव नागरि, मन में मोद न माई ।
सिय स्वामिनि की कृपा सुमूरति, युगल भाव प्रगटाई ।।
चन्द्रकला वर नाम सुहावन, शोभा वरनि न जाई ।
तिनकी षोडस मुख्य सहेली, नाम कहौं सुखदाई ।।
युगलप्रिया श्रीप्राणप्रिया जू, नवल नेह लतिकाई ।
हेमलता श्रीप्रीतिलताजू, मधुर लता मन भाई ।।
युगल विहारिणी रूपलताजू, श्रीरसमोद लताई ।
चम्पलता श्रीप्रेमप्रभाजू, मंजरि प्रेम सु गाई ।।
रस माला अनुराग लताजू, नाम लता रस दाई ।
लतिका प्रेम सिया की भगिनी, सेवति लाड़ लड़ाई ।।
इनकी शरण होत जे भाविक, पावहिं सु रस अघाई ।।

पद ७

आजु जयन्ती चन्द्रकला की, प्यारी अति मन भाई ।
श्रीरसमोदलता गृह उत्सव, बाजत अनन्द बधाई ।।

मृग मद केशर चन्दन कुमकुम, रचि रचि चौक पुराई।
तेहि पर मंगल कलश धरे सजि, मनिमय दीप सुहाई॥
सुघर सुआसिनि रचत साथियाँ, बन्दनवार बँधाई।
गान तान करि विविध कुतूहल, रसिक जनन बुलवाई॥
आनन्द में आनन्द बढ़्यो अति, लली छठी छबि छाई।
ताही छिन सुख उदय भयो अति, मोद हृदय उमगाई॥
'मोद' मोद भरि वसन लुटावत, रसिकजनन पहिराई।
दान मान सनमान सबनि करि, आनन्द हिय न समाई॥
सिय सनेह दूसरि विग्रह होय, मोद सु गृह चलि आई।
'श्रीरसमोद' चकोरी प्रफुलित, अमल शशिकला पाई॥

पद ८

घर घर मंगलचार जनकपुर, वर्षगाँठ प्यारी चन्द्रकला के।
सजि नव सप्त सकल द्युति दामिनि,
नव यौवन सब चली डगर के॥
कंचन कलश सजे सिर ऊपर, दधि दुर्बा अंकुर सुठि नीके।
चन्द्रप्रभाजू के महल पधारे, भई भीर भरी सब सुख के॥
नाचति गावति करति कुतूहल, बिसरी काम धाम घर घर के।
'युगलप्रिया' सुख फूलि गई तब, जब देखी प्यारी सखिजू के॥

पद ९

बजत बधाई आजु महल में, प्रगटी चन्द्रकला सखि अगरी।
परमेष्टी सखि जनकलली की, सकलकला गुनमें अति नगरी।
चन्द्रप्रभाजू के तप की मूरति आचारज रसिकन कुल सगरी।

इनके चरन कमल आश्रित बिन महल वास सुख के नहिं चहरी
उमा रमा ब्रह्माणि आदि जे दरशन हेत खड़ी रह पबरी।
जाके विभव शेष नहिं कहि सक कहे एक मुख 'अग्र' कस करी।

पद १०

जै श्रीचन्द्रकला अलबेली

अति सुकुमारि रूप गुन आगरि नागरि गर्व गहेली।
निमिकुल प्रगटि संग सिय प्यारी प्रिय कारिनि रसकेली।
चन्द्रप्रभा के सुकृत कल्पतरु उलही लता नवेली।
कांचन वन कमला प्रमोद वन लीला लहरि सुझेली।
मोहनि यन्त्रवीन स्वर टेरति प्रीतम चित्त विथैली।
शरणागत पालिनि रस मालिनि चालिनि गज गति हेली।
'युगलप्रिया' अनुराग सदा सम्बन्ध राग की मेली।।

सोहर पद ११

चन्द्रभानु जू के द्वारे सु नौबत बाजहिं हो।
ललना, सुनि धुनि नगर हुलास सु मंगल साजहिं हो।
वीथिन सड़क सु चौक अथाई हाटहिं हो।
ललना, मन्दिर कोट के द्वार चहुँदिशि ठाटहिं हो।।
वन्दन वार वितान कलश धरि दीपहिं हो।
ललना, रम्भा पुंग रसाल सफल तरु रोपहिं हो।।
चामर ध्वज सु पताक साथियाँ सोहैं हो।
ललना, चित्र विचित्र बनाय रूप मन मोहैं हो।।
दधि दुर्बा फल फूल सु अंकुर नीके हो।

ललना, कनक सु थारन साजि धरे प्रियजी के हो ॥
नारि शृंगार सवाँरि कलश शिर धरि के हो ।
ललना, कर लिये मनिमय थार आरती सजिके हो ॥
सात कोट के द्वार सु परितह प्रविशहिं हो ।
ललना जाय लली अलि देखि चरण कर परसहिं हो ॥
गाय मधुर स्वर सोहिलो साज बजावहिं हो ।
ललना, विविध स्वाँग करि नर्तहिं देखाय सुभावहिं हो ॥
देव विमाननि आय सु उत्सव देखहिं हो ।
ललना बरसत सुरतरु सुमन भाग निज लेखहिं हो ॥
चन्द्रभानु जू के पुण्य सुभाग सराहहिं हो ।
ललना, पराभक्ति रस रूप भाव हिय चाहहिं हो ॥
चन्द्रकलाजू के जनम जो मंगल गावहिं हो ।
ललना, महल टहल निज रूप दिव्य सो पावहिं हो ॥
प्रेम सहित, 'रसमोद' ब्रहिन कहँ सेवहिं हो ।
ललना, प्रीतम हाथ बिकाहिं अपनपौ देवहिं हो ॥

पद १२

प्रगटी सखी चन्द्रकला सुख दानी ।
तिरहुत देश जनकपुर सुन्दर कंचन मय रजधानी ॥
माधव मास शुक्ल शम्भू तिथि, ऋतु वसन्त छबि सानी ।
चन्द्रभानु पितु मातु सुकृत तन, चन्द्रप्रभा महरानी ॥
सियजू की जे मुख्य सहेली, तिन सब माँहि प्रधानी ।
'प्रेममोद' रसराज भाव प्रद वात्सल्य सुगुन शुभ खानी ॥

पद १३

चन्द्रभानु गृह बजत बधाई ।

चन्द्रकला सर्वेश्वरि प्रगटी, श्रीसिय अपर रूप श्रुति गाई ॥

इनकी कृपा कटाक्ष बिना नहिं, कनक महल की प्राप्ति उपाई

प्यारी पिया कमल कर जोरे, 'रूपलता' विहरत नित माई ॥

फुटकर–पद १४

मिथिला के बासी सब आनन्द विभोर हे ।

प्रगटी श्रीचन्द्रकला सखी सिरमौर हे ॥

श्रीचन्द्रप्रभा जू के सुकृत न थोर हे ।

वान्हलैन श्रीचन्द्रकला प्रेम कर डोर हे ॥

यद्यपि सहेली सब रूप गुन जोर हे ।

तदपि श्रीचन्द्रकला छटा देखि भोर हे ॥

त्रिभुवन बीच नहिं पटतर और हे ।

एके श्रीलाड़िली छबि हिनकर समसेर हे ॥

एक त श्रीलाड़िली जू छली वरजोर हे ।

दोसरो किशोरीजू की आबि गेली और हे ॥

दोउ छवि निधि दोउ चन्द्र सम गोर हे ।

दोउ रसराज रस सुधानिधि बोर हे ॥

'मधुरलता' करथि अहाँ से निहोर हे ।

वसु सदा अली सँग हिय विच मोर हे ॥

पद १५

चिर जीवो सदा चन्द्रभानु लली ।

रसिकन को अति सुख बरसावैं, दरसावैं रस रंग गली।
सुख सोहाग छिन-२ अति बाढ़ै, नैहर सासुर रंग रली।
'प्रेममोद' सिय पिय छबि छाके, जिमि भँवरी लहि कमल कली

पद १६

जै श्रीचन्द्रकले गुण ऐनी।
अतिसय प्रिय श्रीजनकलली की, प्रीतम हिय निवसैनी।
निन्दति निज छवि मदन बिलासिनि मृगनैनी पिक वैनी।
रास रहस कल केलि प्रवीना सिय प्रीतम रस दैनी।
सेवन हित 'रसराज' युगल पद आस लगी दिन रैनी॥

श्रीचारुशीला जन्म बधाई

पद १

बधइयाँ गुइयाँ हिलमिल गावो राज।
चन्द्रकान्ति जू की कोखि सिरानी, सुताजू जनमी आज।
शत्रु जीत नृप देत मुदित मन, पट भूषन गज बाज।
हरषि बोलाय बोलाय याचकन विदुषन विप्र समाज।
'वालअली' नौबत धुनि बाजहिं जनु सावन घन गाज॥

पद २

लखो री मिथिला मोद भरी।
माधव शुक्ल पक्ष पूरन तिथि वासर चन्द्र घरी।
चित्रा नखत लगन घनि धनि वह, धन्य सो धन्य घरी।
रानी चन्द्रकान्ति नृप अरिजित सुकृति की बेलि फली।
जनमी चारुशिला जू जिनकी, चन्द्रअली अनुचरी॥

पद ३

गाओ री सहेली मंगलचार ।
जनम गाँठ श्रीचारुशिलाजू की गाओ गाओ सजि शृंगार ।
माधव मास पूर्ण पूरण तिथि वार भौम सब योग उदार ।।
वेद विदित निमि वंश प्रगट भइ रूप भरी गुणशील अपार ।
सियजू की प्रिय सखी अधिक हित गावत गुन जाके श्रुति चार
'रसिकअली' ताकी लघु भगिनी सेवत चरन कमल सुखसार ।

पद ४

सहेली आनन्द मंगल आज ।
वरष गाँठ श्रीचारुशिला जू की घर घर मंगल साज ।
चौके चारु कलश ध्वज चामर पूरन घट मधिराज ।
नाचत गावत मुद उपजावत जुरि जुरि सखिन समाज ।
'रसिका' के उर अधिक भयो सुख नातो नेह निवाज ।।

पद ५

बधाई बाजै हो मन हरनी ।।
मिथिलापुर में मंगल घर घर, सुख शोभा को वरनी ।
लघु भ्रात श्रीमिथिला पति के, शत्रुजीत सुठि करनी ।।
समकुल रूप सकल गुन की निधि, चन्द्रकीरति तासु घरनी
ताकी कूष प्रगट कन्या भइ, छवि शोभा की धरनी ।।
जनकललीजू की सुख द्रुम लतिका, नाना मुद फल फरनी
'रसिका' लघु भगनी है ताकी सियपद रज अनुसरनी ।।

पद ६
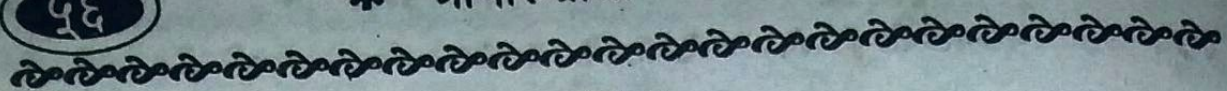
चिरंजीवों सिया की दुलारी री माई ।
चन्द्रकान्तिजू की गोद सुफल भई सब सखियन की मोदमई।
वैशाख शुक्ल पूर्णिमा तिथि में चारुशीलाजू प्रगट सुखदाई ॥
शत्रुजीत राजा गृह महोत्सव सखिया सबकी भाग्य रसछाई ।
रामप्रिया सखी नाचे मगन मन मोद प्रमोद उर उमगाई ॥

—: अक्षय तीज (चन्दन सिंगार) :—

आजु सखी अखै तीज सुहाई ।
मलयज पंक निकुंज मनोहर सखियन रुचिर बनाई ॥
जाल झरोखे झालर कलशा शोभा अद्भुत पाई ।
मलयज पंक रचे सिंहासन मलयज पंक बिछाई ॥
मलयज पंक सिंगार साज अंग राजत सिया रघुराई ।
मलयज पंक बिजन कर लीन्हे ढोरत सखि समुदाई ॥
मलयज वारि फुहारे छूटत मलयज हौज रचाई ।
मलयज पंक रचे द्रुम नाना फूलि रही फुलवाई ॥
सीतल मन्द सुगन्ध पवन बह गावत बीन बजाई ।
नाचत अलिगन तानन लै लै मोद भरी गति लाई ॥
मलयज पंकज जटोरे भूषण सखियन अंग पहिराई ।
निरखत रसिकलाल, रस भरि उर 'रसिकअली' वलिजाई

पद २

प्रीतमकी छवि निरखि नवेली निजकर सों हँसि करत सिंगार
ग्रीषम समय अंग शीतल हित चन्दन चित्र बिचित्र सँवार ॥

फूलन के कुण्डल श्रवनन बिच पहिरावति पुनि रहति निहार।
फूलन के सिर मुकुट सँवारति फूलन के गजरे उर धार ।।
अंग अंग फूलन की शोभा दरशत लूटत नैन हजार।
'मोहनि' लटक अटकि बुलाकन प्यारी छबि निरखत दिलदार।।

पद ३

चन्दन बिहरत लली लाल सुख यंत्र चलत दुति चन्द घाल।
झलकत चन्दन छवि सुभग अंग लखि रहत लजि अगनित अनंग
युग चरन संग युत चरन जाय दरसतहिं जिन बिच दृग लुभाय।
करि यंत्र मंत्र सम लगत हीय छबि 'मोहनि' मोहन चपल कीय।।

पद ४

कुञ्ज विहारिणि कुञ्ज विहारी बनि बैठे चित्र सारी।
चंदन अंग सिंगार किये हिय चंदन सम शीतल सुखकारी ।।
घसि चंदन घनसार सुहृदनि करि अरचन चरचे पिय प्यारी।
'हरिप्रिया' प्रसन्न वदन की वार वार वलिहारी ।।

ग्रीषम-वन-विहार

पद १

विहरनि वन प्रमोद सिय जीवनि।
अति आचरज सु छवि भीने संग सहचरि गुन रस पूरनि।
अंश परस्पर दिये ललन दोउ लिये मोल मन रसिक सजीवनि।।
अवलोकनि मुसक्यान माधुरी छाय रही चहुँदिशि रुचि सीवनि।
'युगलअनन्यअली' लीला दृग देखत चाह वाढ़ चित पीवनि ।।
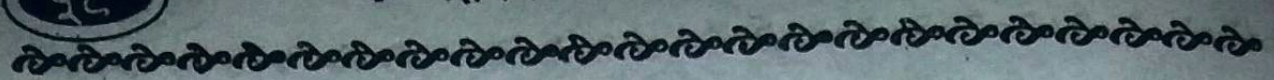
पद २

सरयू तट विहरत रंग भरे अवधेश ललन मिथिलेश लली।
कर कंजन से करकंज गहे अति अमल अदा रस रीति गली।
मुसक्यान परस्पर प्रीति पगी शत सहस सुधाकर मान भली।
अंग अंग उमंग तरंग लसे सोहे संग में सुकुमारि अली।
गये भूलि अपनपौ प्यार छके उझके छवि 'युगलअनन्यअली'।

पद ३

रस माते कुँजन डोलैं।
धरि धरि अंशन भुज पिय प्यारी करि-२ विविध किलोलैं।
हँसि हँसि कसि कसि छतिया लगावत रस-२ बतियाँ बोलैं।
प्रेमप्रीति, फँसि-फँसि मन 'मधुरी' गिरह कपट सब खोलैं॥

पद ४

प्रीतम चलहु कुँज द्रुम छहियाँ।
विविध रंग के सुमन खिले जहँ सुन्दर बागन मँहियाँ।
सुनि सिय मधुर वचन रघुनन्दन हँसि प्यारी कर गहियाँ।
'मोहनि' जाय प्रमोद विपिन में विहरत दै गलबहियाँ॥

पद ५

नागरी नवल नेह अरुझाय।
उतरि चलि पिय कोमल कर धरि कुँजन दिशि मुसुकाय।
हँस गमनि निरखत प्रीतम दिशि मधुरी सैन चलाय।
छबि अमृत बरसत चारो दिशि अलि दृग पीवत अघाय।
नवल निकुंज नवल सेजियन सुख नवल पिया मन भाय।

विहरति नवल अँखियाँ रसमाती नव रस बस ललचाय।
इक दिशि चन्द्र चंद्रिका फैली इक दिशि घन दरशाय।
नवल दंपति नवल 'मोहनि' लीला निरखि सखी बलिजाय।

पद ६

फुल बंगला बन्यों है सुखकारी।
सुमन सेज सोहत अति सुन्दर राजत तापर पिय प्यारी।
दोऊन के चंदन चर्चित वपु सुमन सिंगार मनोहारी।
शोभित चहुँदिशि रुचिर केवरा छुटत सुगंध मिलित वारी।
प्रीतम प्रिया करत रस वतियाँ अंशन ऊपर भुज धारी।
अनुपम दोउ सुछकि शोभा लखि 'प्रेम' जात है बलिहारी।

पद ७

बिहरत सुमन सेज पिय प्यारी।
पान खवावत विहँसि परस्पर, अँखियन मदन रंग दुतिधारी।
ऐंचत हार पराग झरत रस, चहुँदिशि जल लहरन छबि न्यारी
अलिगुंजति मकरन्द चखन हित,अरुझि रहति फँसि'मोहनि'वारी

पद ८

आओ प्रिया मिलि लेहु अंक भरि,चन्दन ते शीतल तुमरो उर
मधुरे सुधा रस प्याय जिआवो,अतन तपन जारत हमरो उर।
कमल कली से सरस उरोज है,थल गुलाब ते नाभि सुघर वर।
'अलिसियरसिक' रसीली प्यारी,तेरी बरोबर तुहि न अपर पर

पद ९

प्यारे दशरथजू के लाल, मोपै रस की चितवनि डारी।

बिहरत फिरत प्रमोद विपिन में श्याम वरन मनहारी।
कटि पीताम्बर धोती सोहै, लाल पाग सिर न्यारी।
तापर तुर्रा अधिक मनोहर मोतियन झालर दारी।
नासामनि की लटक चाल पर 'युगलप्रिया' बलिहारी।

पद १०

ठाड़ो रे प्रमोद वन अवध दुलारो रे।
लटपट चाल अनोखी झाँकी,देखत हिय ठगि जात हमारो रे।
बोलत बचन सुधा जनु बरसत,चितवन में टोना पढ़ि डारो रे।
यहि निकुँज बन कहँ तू आई,कहि मोतन हँसि नेक निहारो रे
'मोहनिअली' सुनत पिय बतियाँ,नैनन तुरत नेह जलधारो रे।

पद ११

तेरी लटक चाल पर वारी रे।
क्रीट लटक सिर मुकुट लटक सुठि कलँगी लटक सु न्यारी रे।
मोतियन की लर लटक झलक छबि लटक अलक दुतिकारी रे।
कुण्डल लटक सु झलक कपोलन लटकन लटक सु न्यारी रे।
ग्रीव लटक बैजन्ती माला, पदिक हार छबि भारी रे।
कटि तट लटक पीताम्बर सुन्दर,जटित मणिन दुति हारी रे।
पगन लटक नूपुर धुनि 'मधुरी' सुनि-२ विरति बिसारी रे॥

पद १२

रंग उमंग भरे विहरत पिय प्यारी।
रंग भरे भुज दिये परस्पर वीरि मुखन रस कारी।
रंग भरी सखि चन्द्रकलादिक, निरखि प्रेम मतवारी॥

विहरत फिरत श्रृंगार विपिन में फूल सिंगार सँवारी।
बैठे आये सुमन बँगला में तहँ छूटत अतर फुहारी॥
पिय प्यारी पर सब्र होहिं निछावरि तन मन सुरति विसारी
'अलिसोहाग' अनुराग उमँगि उर जै जै जयति उचारी॥

पद १३

मोतिन महल तामे सरयू नहर लागी,
छूटत सुगन्ध यों गुलाब की फुहारे री।
नवल निकुञ्ज बन्यो पुष्पन गुलाबन को,
फूल्यो है चतुर दिशि लखत किनारे री।
तखतैं फरस लागी प्यारी पिय प्रेम पागी,
अलिगन रंग रागी तान लै उचारै री।
वीणा मृदंग मुचंग आदि यन्त्र बाजै,
'युगलप्रिया' रीझि रिझि तन मन धन वारे री।

फूल-बंगला पद १

सुमन महल राजत पिय प्यारी।
सुमन अंग भूषण सुमनन की सुमनन की तन सारी।
सुमन वारि दोउ दिशि अलि ठाढ़ी सुमन मोरछल धारी।
निज सुमनन दोउ हारि जात हैं निरखि अलक घुंघरारी।
सुमन निकुञ्ज कुंज सुमनन की सुमन 'मोहिनी' डारी।
सुमनन के सरवर ढ़िग राजत, भरि सरयू सरि वारी॥

पद २

बैठे दोउ नवल नेह भरे, नृप नन्दन जनक दुलारी।

सुमन सिंगार किये अंशन भुज, दिये शोभा अति भारी।
पिय सिर पाग सुमन की जामा, सिय तन सुमन की सारी।
बहु विधि सुमन हार पहिरे उर, सुमन गुच्छ कर धारी।
सुमन सिंगार किये बहु बनिता, नव वय अति सुकुमारी।
कोउ कर पानदान पिकदानी, कोउ शीतल जल झारी।
अतर अनेक प्रकार लिये बहु, वहु गुलाब सुठि वारी।
कोउ अति मधुर मधुर स्वर गावत्ति, चोप राग नित हारी।
'रसिकअली' यह अद्‌भुत शोभा, निरखत तन मन वारी ॥

पद ३

किये दोउ राजत सुमन सिंगार।
बैठे कनक भवन आँगन बिच, सुमन गुच्छ कर धार ॥
प्यारी के सिर सुमन चन्द्रिका पिय सिर कलँगी सुधार।
'रसिकअली' सिय रघुवर छबि पर वारिये वहु रति मार।

पद ४

गरमी के दिन में फूलों का बंगला बनाइये।
रंग रंग के बूटों से उसको सजाइये।
दरवाजा तरहदार सुरुख सब्ज सोहावन।
कुन्दन की कली पीत चमेली से छवाइये।
मेंहरावो में मुहब्बत गुच्छे चीन लाइये।
हर चार तरफ उसके गुलाबों की टट्टियाँ।
कोमल कमल अमल की फरसें बिछाइये।
नख शिख सिंगार साजि के हर तौर से प्यारी।

श्रीजानकी जीवन को उसी में लाड़ लड़ाइये।
कुसुमन के सुभग सेज सरस रचि के तरह दार।
'अली हेमलता' लली लाल छबि समाइये ।।

पद ५

कीन्हें सिंगार गुलाब के फूलन, साँवरो फूलि के फूलन जोहै।
चम्पकली सखियान के बीच में, पंकज नील कली जिमि सोहै
मोतिन धाम में धाम गुलाब को,छुटत सुगन्ध दिशान को मोहै
'रामसखे', सरयू के लतन में, रूप वितान तन्यो मन मोहै।

पद ६

फुल बंगला में राजै नवल रसिया।
नख सिख लौं सिंगार सुमनन को, अंग सों अंग रहे गसिया।
अगनित यन्त्र छुटत फुल बगिया,त्रिविध समीर सुखद लसिया
'प्रेममोद' ग्रीषम ऋतु सरसत, सिय प्रिय रूप हिये बसिया।

पद ७

लै चलु बाँके यार, खसखाने दार बंगला।
सरयू तीर पुनीत सोम वट, झर झर परत फुहार।
बाजे मधुर मृदंग बजाये सखि गावत तान पियार।
'नवलअली' तिन कुञ्जन में,पिय सिय संग करिय बहार।

पद ८

युगल ललन नव छबि श्रृंगारे।
फूल सेत चाँदनी सु फूलन फूल पाग सिर धारे ।।
जामा फूल फूल के पटुका, फूल पेंच गल हारे।

फूल कंचुकी चूनरि फूलन, फूल मांग झल कारे ।।
फूल माल दोउ गरे बिराजत, कोटि चन्द्र उजियारे ।
मानो फूल सिन्धु में खेलत रति, मनोज द्वै तारे ।।
फूल सिंगार देखि प्रियाप्रीतम, सखियाँ प्राण बिसारे ।
'जानकिवर' की मूरि सजीवनि, वाह कहत बलिहारे ।।

पद ९

बंगला फूल मध्य दोउ बैठे, सोहत श्यामा श्याम ।
अरुण वसन प्यारी तन राजत, प्रीतम पीत ललाम ।
जाही जूही ललित चमेली, सेवति बेला दाम ।।
झम झम परत गुलाब फुहारे, घनन घनन घनश्याम ।
निरखि प्रिया अनुपम छबि प्रीतम, नवल रूप अभिराम ।
कहत बनत नहिं कहौं कहा सखि, ये कामहु के काम ।
प्रीतम देखि प्रिया सुन्दरता, कहत मनहिं मन राम ।।
हमतो बिके सदा इनके कर, बिना मोल के दाम ।
रहौ सदा आनन्द परस्पर, 'जानकिवर' सुखधाम ।।

पद १०

फुल बंगले में सोहै युगल रसिया ।
फूल के हार हमेल विराजै, फूलों की सोहै नवल पगिया ।
शीशफूल कर्णफूल फूल की, फूलन ही की लसी अंगिया ।
खेलत फूल गेंद लिये दोउ, चित चोरत सखि मृदु हँसिया ।
'सियाअली' तन मन फूलेरी, फूल विहार बसी अँखिया ।।

पद ११

बंगलइया में राजे मजेदार यार।

आस पास फूलन की क्यारी, बीच में फूल्यो गुलाब जेवदार।

चोवा चन्दन अतर अरगजा, ऊपर से बरसे गुलाब के फुहार।

रसिक विहारिणि रसिक बिहारी, रसिया रसिक हिया के हार

'मौन' कहत छबि देखु सहेली, अवध विहारी को लागो दरबार

पद १२

सजि सुमन श्रृंगार दोउ सोहैं भरे प्यार,

छाई शोभा की बहार फूल बंगला में।

दोउ गर भुज डार देखैं दृग पट टार,

प्रेमी जन बलिहार फूल बंगला में।

मन्द मुसुकैं निहार करैं हिया आर पार,

रस बरषै अपार फूल बंगला में।

झाँकी झाँकि मजेदार गावैं गुणी यन्त्र धार,

होत सुमन न्यौछार फूल बंगला में।

धन स्वामिनि हमार धन्य राघो सरकार,

'मोद' माचै जय जयकार फूल बंगला में।

आरती-पद १३

सुमन आरती सीय रमन की।

सुमन सिंहासन तापर राजत' सुमन छत्र चामर सुमनन की।

सुमन चन्द्रिका क्रीट सु कलंगी, कुण्डल तरिवन लसत सुमन की।।

सुमन माल दम्पति उर झलकत, सोहत भूषण वसन सुमन की।

चहुँदिशि अलिगन सुमन सँवारे,लिये खड़ी सब सौज सुमन की।
गलबहियाँ दिन्ही पिय प्यारी, दोउ करकंज सुगुच्छ सुमन की।
'सियवल्लभ'वलिहार परस्पर,सुमन झरत सब 'देव' द्रुमन की।।

❀ (खस बंगला) ग्रीषम ऋतु विहार ❀

तपन लागी ग्रीषम ऋतु सो अब पिय गवन न कीजिये ।
तहखाने खसखाने शीतल तहाँ बैठि सुख लीजिये ।।
फूलन हार राग चन्दन की नेह नवल रस भीजिये ।
हौद में नाव छोड़ि जलक्रीड़ा, अरस परस लखि रीझिये ।।
लता पर्यंक अंक सियजू के अधर सुधा रस पीजिये ।
'अलिदम्पति' रमिये पिय प्यारी तपनि चुनौती दीजिये ।।

पद २

श्याम सरयू तट लगत सुहाये ।
ग्रीषम जोर जनावत आवत तेहि लखि अति सकुचाये ।।
शीतल अमल सु मन्द सुगन्धित पवन चलत पुरवाये ।
चात्रिक मोर चकोर कोकिला सारस सुर सरसाये ।।
बंगला कुसुम सेज सुननन मय अतर गुलाब सिचाये ।
'सियरसिकअली' शीतलता लखि ग्रीषम गरद दबाये ।।

पद ३

गरमी ग्रीषम खस बंगले छवाय दे ।
खम्भे रम्भ प्रसूनन रचना तापर अतर गुलाब सिचा दे ।।
चहुँदिशि टाटी उसीर की लागी कमल पाँखुरी सेज बिछा दे।
'अलिसियरसिक'निकसि महलों से सरयु पुलिन वन सैल करा दे

पद ४

खसखस के बंगले नीके छाये नव कुसुम कली के।
सरस फुहारे बरसत झरि झरि सुखद मनोहर हीके ।।
केशर अगर अंग अनुलेपन सुमन सिंगार सिया पीके ।
झीने बसम अंग छवि दरसै सरसै स्वाद अमी के ।।
फूले कमल नड़ागन वागन सुमन सुगन्ध सरस जी के ।
'ज्ञानाअलि' त्रिभुवन सुख जेहि लखि गावत फीके ।।

पद ५

लाड़िली लाल विराजत खस बंगलइया ।
कुहु कुहु काकिल धुनि होति, मोर बोलै मन हरिया ।।
विविध समीर बहै सुख दामिनि, बैठे सुगन्ध तरंगिया ।
पिय प्यारी छबि निरखि नयनभरि अलि जनु खड़ी पुतरिया।।
चन्द्र वदन मुख चुम्बत दोऊ प्यारे करत नयन में बतिया ।
या छबि देखि प्रिया प्रीतम की 'अली' सोहागन बलिहरिया।।

(ज्येष्ट दसहरा) पद ६

निरखु सखि सुभग दसहरा आजु ।
जेठ सुदी सित पक्ष सुहावन दम्पति को सुख साजु ।।
नवल सिंगार किये पिय प्यारी नवल सिहासन राजु ।
छत्र चँवर व्यजनादिक लिन्हे सोभित अलिन समाजु ।।
बाजत साज मधुर स्वर गावति नटति सु करि २ नाजु ।
'प्रेमलता' यह छबि अवलोकति स्वकर सँवारति काजु ।।

(ग्रीषम-जल बिहार) पद १

करत नवल दोउ वारि विहार।
रघुनन्दन श्रीजनक नन्दिनी, गौर श्याम छविदार॥
वहु सखि मंडल रचि जल ताड़त दुहुँ कर घोष अपार।
लेत उछालें वहु जल ऊपर कर पिचकन की मार॥
भाजत पौरि दौरि वहु छुवत वहुतक वचन प्रचार।
वहुतक डूबि डूबि पग ऐंचत 'रसिक' केलि मद भार॥

पद २

नाव री खेलत सिया रघुवीर।
ज्येष्ठ शुक्ल रैनि उजियारी, शीतल सुखद समीर॥
युगल प्रकास परत जल सरयू, उठत तरंग गम्भीर।
नौका साज समाज मनोहर, भइ सखियन की भीर॥
करत विहार प्रिया सँग प्रीतम सरयू पावन नीर।
सुन्दर गान करत वहु अलियाँ, पहिरि सुरंगी चीर॥

पद ३

नौका विहरि रहै पिय प्यारी।
सरयू जोन्ह जामिनी फैली कुमुदिनि की छवि न्यारी॥
देखत कुंज निकुंजनि शोभा, चले जात मँझधारी।
इन कुंजन नहिं उत कुंजन बिच चलिय कहति सुकुमारी॥
तट द्रुमलता विम्ब जल झलकत सोभा अनुपम धारी।
अलि अवली ठगि जात छिनहिं छिन दम्पति रस मतवारी॥
आलस दृगन प्रिया लखि प्रीतम कहत नैन शर मारी।
इत 'मोहनि' निकुञ्ज निशि रहिये हे मुखचन्द उजारी॥

पद ४

सुमनन मय सरवर ढिग राजत भरि श्रीसरयू वारी।
सरयू कुञ्ज फुलन के बंगले विहरति रसिक रसीली प्यारी।
जल विच सुमनन मय सेजियाँ सखियाँ सुमन सँवारन वारी ।।
हार हमेल गरे फूलत के फूलन पाग पायल छबि न्यारी।
फूलन अंग प्रकाश झलक सुठि दरसत मीन 'मोहनी' सारी ।।

पद ५

ग्रीषम सुख विहरत लली लाल आज केलि करत रस नवल चाल
चहुँदिशि हौजन बिच मैन कर यंत्र चलावति बिहँसि वाल ।।
चहुँदिशि ललना बिच श्याम वाम पहिरे दम्पति कञ्ज माल।
छूटे कच तैरन जलन अन्तर जनु फँसिगो चन्द सेंवार जाल ।।
'मोहनि' सिया मोहन प्रीति भली चमकत जनु सखिन सोहत भाल

पद ६

करि जल केलि निकस भये ठाढ़े,
झीने पट झलकत छबि पावै।
चुवत बून्द रहि रहि छतियन पै,
शोभा अस अनुपम छवि पावै ।।
जनु शसि ते अमृत लै नागिन,
सादर शिव के शीश चढ़ावै ।।
चिहुटे चीर सटे अंगन में,
लखि अलियन के नैन लुभावै।
झलकत मदन मरोर दृगन बिच
'मोहनि' छबि नव अँखिया नमावै ।।
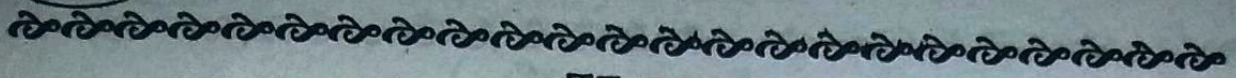
पद ७

ग्रीषम सिंगार सिया को निरखि के छकि रहे प्रीतम रघुराई।
सूक्षम अंग रंग असमानी सारी झीनी प्यारी नव अंगन लगत सुहाई
सरस कंचुकी किनारी जरकस की कबजा मोतिन मन फँस जाई
सरीपोत कानन कुण्डल झुमका मोतियन की नासा मनि झलकाई
चूड़ामनि चोटी में कलियाँ अधरन अजब अरुनता छाई।
पद मोतिन पायजेब सुहाये यह छबि लखि रति रहि सकुचाई।।
छुटत चाँदनी छत पै बैठे अवलोकत पिया अंक लगाई।
पियत अधर रस 'सियादुलारी' चिरजिवहु जोड़ी सुखदाई ।।

(रथ यात्रा उत्सव)

रथ चढ़ि चले अवधपति लाल।
वाम अंग सुहावनी रस रंगी सियजू वाल ।।
चन्द्रकलाजू छत्र लिन्हें विमला चौर सु चाल।
और सहचरियंत्र लै प्रिय गान करति रसाल ।।
लेति मृदंग टंकोर जोर सु देति गति प्रतिपाल।
'युगलप्रिया' समाज साज निहारि भई निहाल ।।

पद २

रथ चढ़ि चले श्री नृप लाल।
संग सखा सोहावने सुख देत वचन रसाल।
सुरंग सुखमा सदन भूषण वसन लसत विशाल ।।
चारु चितवन चहत चहुँदिशि प्रजन करत निहाल।
चोपदार नकीब बोलहिं जयति कौशलपाल ।।

नृत्य गान बितान सुनि जन सहज अति खुशहाल ।

सुमन सुख बरषहिं गगन तें निरखि छबि मुद माल ।।

जनकजा श्रीलखि झरोखन सहचरिन सब ख्याल ।

हेरि 'युगलअनन्यअली' बलिहारी करि मनजाल ।।

पद ३

नवल रथ सजि चले पिय प्यारी ।

नवल सिंगार किये नख सिख लौं संग लिये अलिन अपारी ।

कनक महल तें सरयू तट लौं भीर कुलाहल भारी ।।

बहु सखि छत्र विजन लिये चामर सौज अनेकन धारी ।

वहु सखि गावैं साज बजावैं निरतति कला पसारी ।।

वहु सखि मग कौतूहल करहीं स्वांग अनेक सँवारी ।

बंदी मागध नट बहुरुपिया बनि ठनि सोहत नारी ।।

जय नकीब वर सुजस सुमंगल बोलति बहु सुकुमारी ।

यहि विधि चलि सरयू तट आये सरि पूजन अनुसारी ।।

देव सुमन बरषत सह नारी शोभा निरखि सुखारी ।

अर्चि सकल बिधि अलि युत दम्पति खड़े विलोकत वारी ।।

नाव तरंग भँवर खग पंकज उपर भये जल चारी ।

कल्प वृक्ष तर रतन सिंहासन सरयू तट मन हारी ।।

तापर सिय पिय आय बिराजें अलिगन मंडल कारी ।

'प्रेमलता' यह छबि अवलोकत राई लौन उतारी ।।

पद · ४

रथ साजि चलै ललि लाल सरयू तट कोरी।
सजि नील पीत सिंगार मनोहर जोरी।
चंहुँदिशि अलिगन घेरि सौज सजि सोरी।
करि गान तान मन मोद बजावत भेरी।
सुर सुमन माल बरषाय शब्द जय होरी।
सखि मारग सुमन विझाय अतर सों वोरी॥
ताने लता वितान कलश ध्वज पोरी।
'प्रेमलता' मन मोद रसिक रस वोरी।
सखि पिय प्यारी छबि देखि मगन भई गोरी॥

पद ५

सजनी रथ पर दोउ सोहि रहे।
गल भुजहार बहार देत सखि मृदु मुसुकन मन मोहि रहे।
प्यारी के सिर कुसुमि चुनरिया पिय सिर कलँगी भ्राज रहे॥
'सियाअली' रथ याहि गयल में आवन को मग जोहि रहे।
आय बिराजे रतन सिंहासन सखि सब मंगल गाय रहे॥

पद ६

शोभित रथ पर नवल आजु।
नवल रूप वय नवल साज। नवल भूषण अंग विराज॥
युगलनवल श्रृंगर साज। 'सियाअली' हिय सदन भ्राज॥
आवत सखि सजि समाज। दृगन द्वार पर रहे बिराज॥

पद ७

निरखु सखि सरयू तट छबि छाई ।
रथ ते उतरि फरस पर विहरत शोभा सुख सरसाई ।।
कलप विरिछ तर रतन सिंहासन बैठे सिया रघुराई ।
फल मेवा अंकुर मन भावन पावत मोद बढ़ाई ।।
पान अतर माला दै सबहीं गान सुनत सुखदाई ।
'प्रेममोद' रथ उतसव लखि सुर सुमन माल बरसाई ।।

पद ८

रथ चढ़ि चले सरयू तीर ।
रसिकनी मिथिलेश नन्दिनि रसिक श्रीरघुवीर ।
प्रथम मास अषाढ़ पावस बहत त्रिविध समीर ।
उमड़ि घुमड़ि घमंड घन धुनि व्यापि रहि गम्भीर ।
श्याम गौर सुरंग अंग सु पहिरि कुसुमी चीर ।
जड़े भूषण नगन की छबि देखु मन करि थीर ।
हरित भूमि विभाग कंचन जटित मन गन हीर ।
हरित द्रुम सघनावली खग मधुर बोलत कीर ।
सहचरी गन अमित चहुँदिशि गान तान सुधीर ।
'युगलप्रिया' सु उतरि रथ ते पूजि मानस नीर ।।

पावस ऋतु उतसव–पद १

उमड़ि घुमड़ि आई बादर कारी ।
दशरथ नन्दन जनक नन्दिनी बैठे सखिन संग महल अटारी ।
कुसुमी बसन युगल तन राजत, जगमगात भूषण उजियारी ।

अलकैं विथुरि रही मुख ऊपर, मुकुट चंद्रिका लटक सँवारी ।
चन्द्रावती मृदंग टंकोरति चन्द्रा तान पूर करतारी ।
चन्द्रकलाजू बीन बजावति गावत उमग भरे पिय प्यारी ।
अधिक प्रवाह बढ़्यो सरयू को भरे प्रमोद बिलोकत वारी ।
'युगलप्रिया' रसिकन की सम्पति
अगम निरखि रति पति बलिहारी ।

पद २

उमड़ि घुमड़ि घन बरसत वारी ।
श्रीमिथिलेशनन्दिनी प्रीतम भीजत वन प्रमोद द्रुम डारी ।
पीत वसन नीलाम्बर दोऊ ओढ़ि खरे भये युगल विहारी ।
मानहु घन दामिनि के भीतर चन्द्र चन्द्रिका सोभित न्यारी ।
कुंज कुंज सुधि पाय अलीगन भीजत आई निरखि विहारी ।
चन्द्रकलाजू छत्र ओट किये महल पधारे प्रीतम प्यारी ।
भीजे वसन उतारि मोद भरे नवल वसन श्रृंगार सँवारी ।
'युगलप्रिया' न्यौछावरि तन मन समै भोग धरि आरति वारी

पद ३

दम दम दमकि रही दामिनियाँ,छन-२ घटा घिरी चहुँओर।
रिमझिम रिमझिम पानी बरसै, चलती जोर पवन झकझोर।
कुहु कुहु करि कोइलिया कारी बोलि नचत बन मोर।
'मधुर' छटा अटा चढ़ि निरखत, प्यारी राजकिशोर ॥

पद ४

देखो कारे बादर आवत गरजत परम सोहावत ।
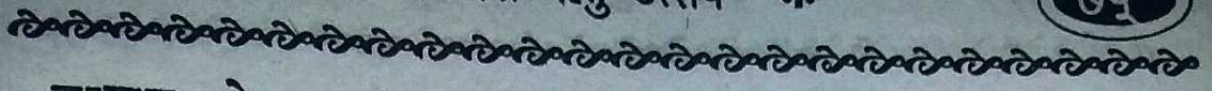
नाचत मोर पपीहा बोलत आनन्द उर उपजावत ।।
बरसन लगे भरे रस बूँदन चपला चमक देखावत ।
भीजन लगे नवल दोउ रसिया हँसि-२ गात छिपावत ।।
भीजि गये दोउ बाग बीच में, अब कुँजन को धावत ।
'मधुरलता' के प्राण पियारे अनुपम रस बरसावत ।।

पद ५

पावस ऋतु प्रियतम प्यारी निरखत चढ़ि कनक अटारी ।
घन घमंड दामिनि दुरि दमकनि वह सुख बरसत वारी ।।
श्याम किशोर किशोरी गोरी घन दामिनि द्युति कारी ।
नटनि मयूर कोकिला कुहकनि सरयु उमंग निहारी ।।
झुंड-झुंड दामिनि सी दमकत पहिरि कुसुम रंग सारी ।
'ज्ञानाअलि' लखि ऋतु विलास छबि वरनत सुखवरवारी ।।

पद ६

सिय पिय वन ते भीजत आवत ।
झूमि-झूमि कर डार गहे दोउ हँसि-हँसि अंग लपटावत ।
साँवर लाल लाडिली गोरी अंगन अङ्ग चिपकावत ।।
रहे कपोल मिलाय परस्पर रसमय केलि दिखावत ।
'युगलप्रिया' जीवन धन दोऊ पावस ऋतु सरसावत ।।

पद ७

देखहिं बरसा के बहारी पिय प्यारी चढ़ी के अटारी ना ।
गरजे बदरवा मोरिला बोलै अति सुख कारी ना ।।
झनन झनन झींगुर झनकारैं दादुर न्यारी ना ।
रसमोद लता, पिया कर सो कर धरी विहरत तीरे ना ।।

हरित झूला कजरी पद–१

हरित वरन तन बसन विभूषन, सिय पिय सजे सोहनियाँ रामा
अरे रामा झूलत हरित हिंडोर हरे मचकनियाँ रे हरी।
हरित सिंगार सजे नख सिख लौं, बनी ठनी कामिनियाँ रामा
अरे रामा झुलवति नाचति गाय हरित रागिनियाँ रे हरी
दादुर मोर शोर चहुँओरे, कीरे हरित बरनियाँ रामा।
अरे रामा हरे हरे द्रुमलता, अवनि सरसनियाँ रे हरी।
हरित समाज साज नव हरितै, सावन सुख सरसनियाँ रामा।
अरे रामा हरित हिंडोल विलास, हृदय उमगनियाँ रे हरी।
नील पीत मिलि हरे हरे रंग, हरी हरी चितवनियाँ रामा।
अरे रामा 'कान्ति' हरित लखि लालन, मृदु मुसुकनियाँ रे हरी

पद २

नवल दोउ झुलत हरे हरे, छबि सिंगार भरे।
सरयु तीर हरित कुंजन बिच तरु तमाल के तरे।
हरित वितान तन्यो ता ऊपर हरित मों फरस परे।
तापर हरितहिं डोर मनोहर देखत मनहिं हरे।
हरित पाग वगो सो हरित है भुषण मणिन हरे।
वसन विभुषण हरित रंग क्या सिय अङ्ग भुषित करे।
हरित पोशाक सखिन अंग साजे मेंघ मलार उचरे।
त्रिविध समीर बहत सुखदाय क रंग फुहार झरे।
हरित छत्र शोभित सुषमा निधि हरित सो चामर ढ़रे।
मधुरअली, लखि हरित छटा सब निज हिय मांहि धरे।

श्रीगुरु पूनो उत्सव पद–१

श्रीअवध में उत्साह घर घर आजु गुरुपूनो अहै ।
पूजि श्रीगुरुदेव पद सद जनम फल दूनो लहै ।।
दश आठ नव षट चारि मत अनुरूप मैं चूनो अहै ।
एक श्रीगुरुस्वामि हितप्रद और नहिं सूनो अहै ।।
जब तक मिले गुरुदेव नहिं तब तकहिं सिर धूनो रहै ।
अब तो 'रामवल्लभा' फल बोये बिना लूनो अहै ।।

पद २

आजु गुरु पूनो परम सुहाई ।
सिय पिय अलिन सहित अनुरागे प्रेम न हृदय समाई ।।
चले हरषि सतगुरु पद पूजन संग सखी समुदाई ।
कनक भवन से दक्षिण निकसे गान तान सरसाई ।।
जाय सकल विधि पूजन कीने बहु विधि लाड़ लड़ाई ।
आशिष पाय चले हरषाई पुनि पुनि शीश नवाई ।।
कनक महल में आय बिराजे अलि युत सिय रघुराई ।
'प्रेमलता' यहि विधि सतगुरु को पूजत सब हरषाई ।।

आरती झूलन की पद–१

झूलन आरती सखिन करतु है, जगमग-२ ज्योति बढ़तु है ।
रतन जड़ित कंचन के खंभा, रचना लखि विधि होत अचंभा ।।
खंभा दोउ जनु मनसिज बिरचित, श्यामगौर तहँ उमंग भरतु है
रवि सम तेज क्रीट झलकतु है, चन्द्रज्योति वेसर हलरतु है ।

सखिन छत्र सिरचवँर ढुरतुहै,झमकि झुमकि दोउ सखी झुलावही
मंद विहँसि दोउ सुख सरसावही।
देव वधु कुसुमन झरि लावही,हरषि निरखि रघुवर जसगावही

❀ सावन झूला ❀

सावन लागो सुहाई हो पियरवा।
मनसिज घेरि घटा नभ छाये, रस बरसत झरि लाई हौ॥
पीउ पीउ कोकिल मोर पुकारत, सुनि-२ जिय तरसाई हो।
कुसुमित विपिन प्रमोदलता तरु सनन चलत पुरवाई हो॥
झुलिहौं मै आजु रसिक मणि तोहि संग प्रीतम प्यारे रघुराईहो

पद २

सहेली सजी सावनी झूलन चलु री।
नवेली सब नागरी, पहिरि घूम घाँघरी,
कुशुम रंग बागरी योवन माती री॥१
फूलों के गले गजरा, दूसरि तैसी नजरा,
नयनों में दिये कजरा, मदन फाँसी री॥२
सोहाई सिर चोटिया, गोहाई वेंदी मोतिया,
दामिनि जैसे जोतिया, अनोखी बनी री॥३

पद ३

झूलन साज सजे हैं प्यारे, जानकी रमन पधारो ना।
अलिगन हिय हुलसावन झूलन, मौज सँवारो ना॥
कोटि कोटि रति काम बिमोहन, छबि उजियारो ना।
'अलि रसकान्तिलता' के जीवन, प्राण दुलारो ना॥

पद ४

झुलन में आज सज धज के युगल सरकार बैठे हैं।
ललित मन मोहने मानो सुछवि श्रृंगार बैठे हैं।।
युगल मुखचन्द हरेन को सभी आँखे चकारी हैं।
परस्पर में प्रिया प्रीतम बने गरहार बैठे हैं।।
मजे से झुलते झूला कभी मचकी भी लेते हैं।
रसिली मैथिली संग में रसिक सरदार बैठे हैं।।
मधुर मुसुकाय सुनते हैं सरस संगीत सखियो के।
गुणे पै दार भी देते सजन दिलदार बैठे हैं।।
कृपामय नयन कोरों से विहँसि हँसि हेरते दोनों।
लता रसकान्ति के हिय के सकल सुरसार बैठे हैं।।

पद ५

झूलन पधारो जी श्याम सुजान।
अतर चुचाती अलकैं सोहैं हरत मदन कौ सान।
रंग महल ते निकसै दोऊ कोटि उदै जनु भान।
कोउ नाचत कोउ यन्त्र बजावत कोउ उचरत मृदु तान।
कोउ कर चमर छत्र कोउ लिन्हें कोउ लिये पानन दान।
'प्रियासखी' भुज अंशन दीने बतियाँ करत लगि कान।।

पद ६

झमकि अलि झूलन को सब जाती।
कुसमी वसन मबल तन सोहत, भूषण धुनि सरसाती।।
मंद गमनि गज हंस लजावनि, दुति दामिनि सकुचाती।

उघरत मंजु मनोरथ छिन छिन, युगल केलि रसमाती ॥
यहि विधि सब झूलन ढिग आई, दम्पति को जस गाती ।
'प्रेमलता' सिय पियहिं झुलावत, लखि विनोद सुख पाती ।

पद ७

सबहिं झुलाओरी हिंडोरे, अलबेली राज दुलारी ।
सावन तीज सोहावन राजे, विविध भाँति के भूषण साजे ।
अंगन प्रति कोटिन रति लाजे, प्राण करौं बलिहारी ॥
कमला विमला चवँर ढुरावै, गानकला सु मृदंग बजावै ।
चन्द्रकला कछु तान सुनावै, लाल देत करतारी ॥
सुख समुद्र श्रीजनकदुलारी, रघुनन्दन की प्राण पियारी ।
'युगलप्रिया' तन मन धन वारी, वारी वारी डारी ॥

पद ८

हिंडोरा आज अनोखो रंग ।
सावन तीज सुहागिनि सियजू झूलत प्रीतम संग ।
कनक भवन आन्दोल कुंज बिच छाई तान तरंग ॥
कमला विमला चन्द्रकलादिक झोंका देत उमंग ।
सारंगी स्वर मण्डल वीणा झाँझ मृदंग उपंग ।
आनंद छाय बजावत अलिगन कोउ गति लेत सुढंग ॥
इत गरजत घन उमड़ि घुमड़ि नभ चमकत दामिनि संग ।
'रसिकअली' सियपिय विलास लखि मोहे रती अनंग ॥

पद ९

सिय सजि सावन तीज सजन संग झूलैं हो ।
सजि सुरंग पोशाक सखी समतूलैं हो ॥

गावहिं राग मलार श्रवण सुख मूलैं हो।
कानन कल कमनीय काम लखि भूल हो ।।
किशलय कोमल घनु अशोकवन फूलैं हो ।
विकसै कमल कल नीर सरयु के कूलैं हो ।।
'अलिसिय रसिक' झुलाय दोऊ दिल दूलैं हो ।।

पद १०

मणि परबत पर जनक किशोरी पिय संग झूलन आई ।
तरु रसाल में नवल हिंडोरा जगमगात छवि छाई ।।
अलिगन झूलि झुलावहिं गावहिं नटति सुसाज बजाई ।
श्यामघटा नभ दामिनि दमकत त्रिविध पवन सरसाई ।।
दादुर मोर पपीहा कोयल चहुँदिशि शोर मचाई ।
'प्रेममोद' तिलई तट झूलन रसिकन को सुखदाई ।।

लाल झूला पद ११

झूलत सिया वल्लभ लाल ।
लाल कंचन खंभ सुन्दर ललित डाँड़ी लाल ।
लाल भूषण अंग झलकत लसत चीर सुलाल ।।
लाल दोउ के वदन सुन्दर अधर बीरी लाल ।
लाल सखियाँ लाल गावैं सब झुलावैं लाल ।।
मोर हंस चकोर कोयल भनत बानी लाल ।
लाल रीझत लाल ऊपर परस्पर सब लाल ।।
'कृपानिवास' सुलाल जोड़ी निरखि नयन निहाल ।।
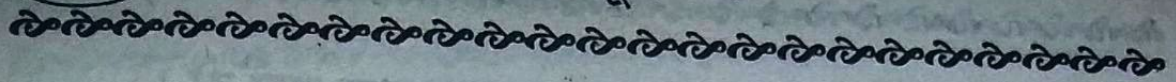
पद १२

झूलत नवल दशरथ लाल ।
सरयु तीर प्रमोद वन में लिये संग सिय बाल ।
अरुड़न मनिमय हेमडाँड़ी रतन खम्भ विशाल ।।
गूहि रेशम डोरि मोतिन पटुली जटित प्रवाल ।
लखि विचित्र हिंडोर विमला नटति दै करताल ।।
हेरि हरि मुख देति झोंका परी छवि के जाल ।
प्रेम बस लखि गही प्रीतम बोलि वचन रसाल ।।
'रामसखे' विलोकि या रस को न होत निहाल ।।

पद १३

झूलत सिया रघुवर लाल ।
लाल मणिमय ललित झूलन लाल खम्भ प्रवाल ।
लाल भूषण वसन तन उर लाल मणि की माल ।।
लाल वीरा लसत आनन वदत वचन रसाल ।।
लाल ललना छबि विवश भे लाल छबि बश वाल ।
लाल ललि सुखमा निरखि 'रसरंगमणी' निहाल ।।

पद १४

झूलत जनकजा रघुलाल ।
सरयु पुलिन प्रमोद वन जहँ ललित कुँज प्रवाल ।
लाल डाँड़ी लाल पटरी लाल खम्भ रसाल ।।
लाल लाड़िलि लाल शोभा लाल मणि के माल ।
लाल चहुँदिशि ठाढ़ि सखि सब निरखि नैन विशाल ।।

लाल भूमि प्रमोद वन में लाल कदम कमाल ।
लाल ललित लुनाइ लखि लखि 'रामशरण' निहाल ॥

पद १५

झूलत लाड़िली नृप लाल ।
लाल विपिन प्रमोद वन में लगी झूलन लाल ॥
लाल डाँड़ी लाल पटरी लाल खम्भ विशाल ।
लाल मणिमय बन्यो आसन लाल तापर लाल ॥
लाल सखि चहुँ ओर राजित सौज लिन्हें लाल ।
लाल ललिन छवि देखि हरषित देत 'मधुरी' ताल ॥

पद १६

भले दोउ लाले लाल लसे ।
मानहु दोऊन के अन्तर के प्रगट राग विकसे ।
लाल बाग में लाल डोर से लाल हिंडोर कसे ।
लाल सखी कर फूल लिये हैं बहुत सुगन्ध बसे ।
लाल वसन भूषण औ आसन लाल चँवर हुलसे ।
लाल लली तेहि मध्य विराजत पान खाय विहँसे ।
लाल छत्र मंडल सिर सोहत दोऊ काम रस रसे ।
रंग लाल की या लाली लखि 'देवन' के मन फँसे ॥

पद १७

झुलत दशरथ लाल कदम्ब तर ।
लाल घटा झुकि गरजत बरसत दामिनि दमकत लाल ।
लाल बाग कुसुमित तरु शोभित बोलत कोकिल लाल ।